विचित्रोपदेश

अथवा

भड़ौआसंग्रह

प्रथम खण्ड

नकछेदी तिवारी और सुधाकर कवि
द्वारा संगृहीत

प्रकाशक :—
दुर्गाप्रसाद खत्री प्रोप्राइटर
भारतजीवन पुस्तकालय
काशी

विचित्रोपदेश

अथवा

भड़ौआसंग्रह

प्रथम खण्ड

नकछेदी तिवारी और सुधाकर कवि
द्वारा संगृहीत
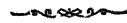
प्रकाशकः—

भारतजीवन पुस्तकालय

काशी

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा लहरी प्रेस काशी
में मुद्रित

पांचवीं बार १०००]   १९२३   [मूल्य ।)

भूमिका

प्रायः जितने ग्रन्थकार हुये और हैं वे "भूमिका" शब्द तथा उसके अर्थ से परिचय रखते हैं। परिचय क्या रखते हैं इस 'भूमिका" द्वारा ग्रंथ का सम्पूर्ण आशय और विषय यथाशक्य पढ़नेवालों के चित्त पर चित्रित कर देते हैं अतएव निस्सन्देह 'भूमिका' ग्रंथ तथा ग्रन्थकार के आशय और हृदय का पूर्ण प्रतिबिम्ब है। इसके अतिरिक्त 'भूमिका' ही एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा ग्रंथकार ग्रंथ सम्बन्धी आवश्यकीय प्रायः सभी बातों को संक्षेप रीति से दिखाता है।

यद्यपि इस पुस्तक का नाम और विषय ऐसा नहीं कि जिसके प्रगट करने की कोई आवश्यकता हो तथापि प्राचीन रीत्यानुसार इस पुस्तक में भी 'भूमिका' लिखी गई है।

यह पुस्तक सम्बत् १९४१ में साधारण रीति से संग्रह होकर मामूली बदामी कागज़ पर बिचित्रोपदेश के नाम से प्रकाशित हुई थी। इसके संग्रह होने के पहिले बहुतेरों का यह कथन था कि जैसे शृङ्गार, बीर आदि विषयक पुस्तकें निर्मित होती हैं वैसेही नीति, उपदेश सम्मिलित हास्यरस की कोई पुस्तक होनी चाहिए।

इन बातों को सोच विचार कर सामयिक कवि लोगों द्वारा हास्यजनक उपदेश तथा नीतिविषयक कवित्त संग्रह करने का प्रबंध किया गया और हास्यरस सम्बन्धी विशेष कवित्तों के एकत्र होने के कारण इस पुस्तक का नाम 'भडौआसंग्रह' रक्खा गया। छपने के समय इस पुस्तक को नव शिक्षा पाठकों ने देखा

तो "भड़ौआसंग्रह" के स्थान पर बिचित्रोपदेश नाम रखने की अनुमति दी और उसी अनुमतिके अनुसार यह पुस्तक 'चन्द्रप्रभा प्रेस' काशी में प्रथम आवृत्ति छपी किन्तु जब इस नाम का प्रभाव ऐसा हुआ कि एक भी पुस्तक किसी ने न लिया तब फिर भी उक्त महाशयों ने द्वितीय आवृत्ति में बिचित्रोपदेश के नीचे मोटे अक्षरों में "भड़ौआसंग्रह" लिखने की राय दी।

यद्यपि बिचित्रोपदेश के नीचे "भड़ौआसंग्रह" लिखने से प्रायः पाठकगण यह अर्थ करते होंगे कि बिचित्र उपदेश का अर्थ "भड़ौआसंग्रह" है और "भड़ौआसंग्रह" के नीचे बिचित्रोपदेश लिखने से विषयबोधक नाम सिद्ध होता है और मेरा अभिप्राय भी यही था परन्तु पहली दूसरी आवृत्ति में नामों के हेरफेर होने से वह बात जाती रही! वह बात क्या जाती रही इस नाम के रीति से ग्रंथ का सम्पूर्ण आशय बदल गया।

निस्सन्देह यह बात प्रसिद्ध है कि नाम बिकता है चाहै काम कैसाहू हो, क्योंकि नाम का प्रभाव सुनते ही चित्त पर अपना भाव प्रगट कर देता है। आज दिन यह पुस्तक चार भागों में छप कर तैयार है। इसके प्रचार का यह हाल है कि यह प्रथम खण्ड चतुर्थ बार मुद्रित हुआ है। दूसरी तीसरी आवृत्ति के समय बहुतेरे लोगों की यह राय हुई कि इसका क्रम संस्कृत हास्यार्णव के अनुसार, जिसके आधार से अन्धेर-नगरी महाअन्धेरनगरी आदि बने हैं, रक्खा जाय, परन्तु स्वतन्त्र रचना न होने के कारण चेष्टा करने पर भी पूर्ण सफलता प्राप्ति न हो सकी। अस्तु जो हो इस नाम के प्रभाव से यह तो अवश्य हुआ कि कविता मात्र के जाननेवाले इसके नाम और गुण से वंचित न रहे।

इस आवृत्ति में "भड़ौआबिधान" कतिपय कवियों के जीवनचरित्रों के अन्तर्गत लिखित कबित्तों की ऐतिहासिक घट-

नायें देने का प्रबन्ध किया गया था किन्तु प्रधान विषय से अधिक हो जाने के कारण कवि जीवनचरित्र[1] इसमें नहीं दिया गया।

"भड़ौआ विधान" के प्रायः लक्ष्य लक्षण सब ही साहित्य ग्रंथों में कहीं२ पाये जाते हैं किन्तु रामरसायन के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रंथ देखने सुनने में नहीं आया जिसमें यह विषय पूर्ण रूप से लिखा गया हो। यह रामरसायन श्री ३ सुहृद्वर्य्य भगवन्त कवि बिछूर जामताली जिला प्रतापगढ़ द्वारा श्रवण हुआ था जिसके अनुसार यह "भडौआबिधान" संक्षेपसे लिखा गया है।

यद्यपि सभी जानते होंगे कि "भडौआ" 'भाड' शब्दका क्रिया बोधक अर्थ है किन्तु केशव आदि प्रधान ग्रंथकार लोगों की नियमावली देखने से इस 'भड़ौआ' शब्द का प्रभाव कुछ और प्रतीत होता है।

केशवजी लिखते हैं "नगनहिं अशुभ प्रमान" और "कर्त्ता अरु जाको करे" तथा भिखारीदास लिखते हैं 'सो दोहा चण्डालिनी, बोले बिबिध बिनासु' इत्यादि इससे सिद्ध हुआ कि इसका फल भी कुछ विशेष है।

वास्तविक पूर्ण क्लेश और क्रोधयुक्त कथित संपूर्ण अङ्ग परिपूरित रचना सद्यः फलित होती है। यह साधारण मनुष्य का कार्य्य नहीं, इसके कर्त्ता कोई और ही बिविध विद्या विशारद देवशक्तिसम्पन्न सिद्ध पुरुष होते हैं। ग्रन्थकारों का सिद्धांत देखने से निश्चय होता है कि इस विषय का परिणाम अनिष्टकारक है और इसीसे यह अधम काव्य के नाम

---

१ कवियों का जीवनचरित्र कविकीर्ति कलानिधि की दूसरी कला में लिखा गया है।

से कलंकित है। न्यूनाधिक अङ्गों के होने से इस रचना का सद्यः फल, कालान्तर फल तथा केवल हास्यजनक फल होता है और केशवजी के कथनानुसार इस के फलभागी दोनों होते हैं और यही कारण है कि ग्रंथकार लोग इस रचना को बारम्बार निषेध करते हैं।

क्रोध, मोह, लोभ आदि के कारण यह प्रयोग आदि ही से चला आता है क्योंकि मनुष्यों की कौन कहै ऋषियों में भी पाया जाता है फिर ऐसी दशा में जब कि साधारणतः दम्भ, द्वेष, मोह, लोभ, मानापमान, दरिद्रता, अविद्या कृपणता और साधारण कवि लोगों की बाहुल्यता इत्यादि विद्यमान है फिर वहां पर इस विषय का होना क्या असंगत है?

भाषा कवि लोगों की प्रतिष्ठा तथा अप्रतिष्ठा बादशाह अकबर के समय से प्रतीत होती है। बादशाह अकबर खुद कवि थे और यही कारण था कि उनके परिकर लोग भी जैसे राजा बीरबर, राजा मानसिंह, नौव्वाब खानखाना आदि पूर्ण कवि तथा कवि लोगों के गुणग्राही थे! उस समय की दातव्यता भी कुछ और ही थी, लाख, पचास हजार किसी कवि को देना साधारण बात थी। अच्छे कवि लोगों का आगमन उस समय के श्रीमान् लोग सौभाग्य समझते थे यहां तक कि स्वयं अभ्युत्थान करते थे। जैसे रामचन्द्र बघेला बान्धवगढ़ ने हरनाथ कवि का, राजा छत्रसाल बुंदेला ने भूषण कवि का अभ्युत्थान किया था।

मान के साथ अपमान भी होता है। बड़े २ बादशाह नौव्वाब तथा राजा लोगों की ओर से कवि लोगों का अपमान भी हुआ है, जैसे बादशाह जहांगीर ने गंग कवि का, बादशाह औरंगजेब ने भूषण कवि का, तथा राजा दयाराम सहोदर राजा टिकैत राय दीवान, नौव्वाब लखनऊ ने बेनी कवि का अनादर किया था जिसका दुर्नाम आजतक चला जाता है। निदान बिचार

करने से इस अयश काव्यके कारण श्रीमान् लोग तथा कविलोग दोनों प्रतीत होते हैं।

बिना एक के दूसरे को हानि या लाभ होना असम्भव है, इसी कारण से परस्पर सम्बन्ध सनातन से चला आता है। ऐसे अवसर में जहां तक देख पड़ता है श्रीमान् लोगों का आदर सत्कार ही उत्तम फल का प्रधान कारण प्रतीत होता है यथा 'आदर तें बस होत मस्त हाथी अरु पण्डित।

भड़ौआसं० चौथा भाग।

इस पुस्तक के अन्त में प्रसंगतः कुछ ऐतिहासिक कविता रक्खी गई है। जैसे 'जस जारयो' 'चकित भौंर रहि गयौ 'नूर-जहां बेगम को' इत्यादि यद्यपि इन कबित्तों का इतिहास इसी पुस्तक में किसी प्रकार से देना चाहता था किन्तु प्रधान बिषय से अधिक हो जाने के कारण कबिकीर्तिकलानिधि की दूसरी कला में लिखा गया।

यह पुस्तक चार भागों में अनेक विषयविशिष्ट छपी है, इसके पूर्ण गुण दोष जब तक प्रत्येक भाग आद्योपान्त न देखे जांय तब तक नहीं प्रगट हो सकते।

अन्त में सानुनय निवेदन है कि पाठकगण केवल परिश्रम तथा उत्साह की ओर ध्यान देकर इस पुस्तक को ग्रहण करेंगे क्योंकि गुणदोषप्रिय महापुरुषों के विषय में सत्कबि लोगों ने यों लिखा है—"पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक।" और "सन्त हंस गुण गहहि पय, परिहरि बारि बिकार।" इत्यादि—

आपका—नकछेदी तिवारी
(उपनाम) अजान कबि।
डुमरांव जिला शाहाबाद।

भड़ौआविधान

मंगलाचरण--दोहा

कैलासी धवलित बरन कलित कलाधर सीस ।
कारण जग बारन बिरद तारन तरन महोस ॥ १ ॥
अंग अवर पत्यंग पुनि संचारी अस्थाइ ।
बलमति रीति प्रकार यह बरनत पण्डितराइ ।। २ ॥

छप्पय

अंग आठ प्रत्यंग सात सातहि संचारी ।
द्वै थाई बल तीनि रीति मति इक २ धारी ॥
उनसित गुन जब होइ वहै रचना उत्तम है ।
अजस काव्य क्यों कहिय मनो क्रोधित अति जप है ।
त्रय भेद ताहु में जानिये उत्तम मध्यम अधम यह ।
फल होत यथाक्रम दुहुन को कविजन कहत बिचार सह ॥

दोहा

दग्धाक्षर अरु अगन पुनि शाप अवर अश्लील ।
वर्ण-विरोधो वाक्य छल अंग कहत मति-शील ॥ ४ ॥
अनुचितार्थ अरु ग्राम्य पुनि बधिर और कटु कर्न ।
अशुभ सूचकहु होनरस देव विनय करि पर्न ॥ ५ ॥
यह साती प्रत्यंग हैं अधम काव्य के भाय ।
याको तजो प्रत्यंग सब याके फल दुखदाय ।। ६ ॥
क्रोध मोह आवेग अरु ग्लानि असूया जान ।
त्यों विषाद आमर्ष यह संचारी दुखदान ।। ७ ।।
अस्थाई याको कहत घृना क्रोध कबिराय ।
देव शकति विद्या शकति अरु अभ्यासगनाय ।। ८ ॥

तृतिय भेद कवि रीति की अरु कविमति की जान।
इनके लच्छन लच्छ सब बरने सुकवि सुजान ॥ ६ ॥
इन सब के प्रस्तार तें बाढ़े भेद असेस।
अल्प भेद तातें लिख्यो समुझि ग्रन्थ मत सेस ॥ १० ॥

(अन्य कवि)

दग्धाक्षर।

ङ, ञ, ण, न, झ, र, ख, भ, प, व, ग, ह, ल, त, ठ, ड, ढ़, सतरह अङ्क। आदि न देइ कवित्त के करत राव तें रंक ॥११॥ आदौ नगहा परि हरौ मद्धे झटका पोय। अन्ते सजर विरोधिये कह फनिन्द गोहराय ॥ १२ ॥

(अन्य कवि)

अगन।

जगन रगन अरु तगन पुनि सगन अगन हैं चारि।
दुगन परे तें दुगुन फल बरनत विबुध विचारि ॥ १३ ॥

(अन्य कवि)

दुगन।

मगन जगन को मित्र है यगन भगन नित दास।
उदासीन जन जानिये रस रिपु केशवदास ॥

यथा कवित्त।

मित्र तें जु होइ मित्र बाढ़े बहु बुद्धि रिद्धि मित्र तें जु दास त्रास जुद्ध ते न जानिये। मित्र तें उदास गन होत जौन दुःख उदै मित्र तें जु शत्रु होय मित्र बंधु हानिये ॥ दास तें जु मित्रगन काज सिद्ध केशोदास, दास तें जो दास बस जीव सत्रमानिये। दास तें उदास होत धन नास आस पास दास तें जु शत्रु मित्र शत्रु सो बखानिये ॥ १५ ॥

जानिये उदास तें जु मित्रगन तुच्छ फल प्रगट उदास तें

जो दास प्रभुताइये । होई जो उदास तें उदास तौन फलाफल जो उदासही तें शत्रु तो न सुख पाइये। शत्रु तें जु मित्रगन ताहि सो अफलगन शत्रु तें जु दास आशु बनिता नसाइये। शत्रु तें उदास कुल नास होय केशोदास शत्रु तें जु शत्रु नास नायक को गाइये १६ (कविप्रिया तृतीय प्रभाव)

शाप ।

होतही दिवान अभिमान बेप्रमान बाढ्यो ससुर दमाद लागे वहै मन्त्र जापने। जाही मन्त्र जाप तें बिलाने बनवारीलाल टीकाराम चुन्नी औ फतेअली गुनापने ॥ फेर भो भवानी परसाद साहु होरा अरु लाला भगवन्त अफजल आदि थापने। सुनो जमराज महाराज या अरज मेरी काशी परसाद को बुलाओ पास आपने ॥ १७ ॥

(रामकवि)

अश्लील दोहा ।

लाज जुगुप्सा अशुभ को व्यंजक जहँ पद होइ ।
रस बिगरै श्रोता विमुख त्रय अश्लीलहि जोइ ॥ १८ ॥

(कवि बल्लभ)

पद श्लील पैये जहां घृना असुभ लज्जान ।
जीमूतनि दिन पित्र गृह तित धृग यह गुदरान ॥१९॥

(काव्य निर्णय)

दुर्जन ते जीते समर पावत हैं सब काम ।
एक बार जो लेत हैं मुख तें गुह[1] को नाम ॥ २० ॥

(कवि बल्लभ)

वर्ण विरोधी ।

विप्र जान अकबर्ग को छत्रिय है चटबर्ग ।

---

१ कार्तिकेय ।

वैश्य बरग तप बर्ग है शेष सुद्र जे बर्ग ॥ २१ ॥
बर्ग बर्ग को दीजिये बर्ग बिरोधे दोख ।
यह पिंगलमत सेस कृत समुझ कबिन करि चोख ॥ २२ ॥
(अन्य कवि)

छन्द विरोधी ।

प्रथम तीसरे चरन में जगन जोहिये जासु ।
सो दोहा चण्डालिनी बोलै बिबिध बिनासु ॥ २३ ॥
बारह लघु बाईस लघु बत्तिस लघु लों मानि ।
चारि बरन दोहा कही बाकी लघु लों जानि ॥ २४ ॥
(छन्दार्णव)

बत्तिस लघु जामे प्रगट बिप्र कहावै सोय ।
यह छत्री जामे लखे लघु चालिस अरु दोय ॥ ३५ ॥
अड़तालिस लघु है जहां वैश्य कहावै सोय ।
इन तें मात्रा अधिक जहँ सुद्र सु षटपद[1] होय ॥ २६ ॥
(छन्दविचार शुकदेव)

वाक्य छल

धोवति माँग सिंगार हित रोवति सौति निहारि ।
नेकु न जीवति काहु वै अति गरवीली नारि ॥ २७ ॥
(अन्य कवि)

कबित्त

दुग्ग[2] पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी उग्ग[3] पर उग्ग नाचें रुण्डमुण्ड फरके । भूखन भनत बाजे जीत के नगारे भारे सारे करनाटी भूप सिंहल लों सरके ॥ मारे सुनि सुभट पनारे वारे उदभट तारे लागे फिरन[4] सितारे गढ़ धरके । बीजापुर

१ छप्पय । २ दुर्ग = किला । ३ उरग = सर्प । ४ तारे मरणावस्था में फिरते हैं अतएव वाक्यछल हुआ ।

बीरन के गोलकुण्डा धीरन के दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके ॥ २८ ॥ (शिवराजभूषण)

ग्राम्यादि सप्त प्रत्यंग दोहा

मति शीतल उपचार कर देह दसा को जोय ।
बाकी बिरह दसा मिटै जो पिय गदहा[५] होय ॥ २९ ॥
(रस रहस्य)

कबित्त ।

करते न जाहिरी बितीते चार मास मोहि अनल की आँच घरी थाँभे ना थँमति है । दोषी दुष्ट आपही लगावैं दोष भूपति को कर्नी—कुकर्मिन को करनी कहति है ॥ काग बैठे करत गलीन स्वान रोवैं खरे कूकत उलूक ब्यारि तैसियै बहति है । लाली किये आँखिन कपाली की कसम खाय काहू कामदारै काली मारन चहति है ॥ ३० ॥ (शिवराम कबि)

दोहा ।

सूरन के दल को दलै कौतुक करै अनूप ।
रन में निहचल यों रहै होय काठ को रूप ॥ ३१ ॥
(कबि बल्लभ)

क्रोध सवैया ।

खग्ग लै खोपरी को हनु वेग औ सूल लै हूल हिये जस मण्डी । श्रोनित पान कै मुण्ड उपारिये रुण्ड लै रोवैं गलीन में रण्डी ॥ तौ इकबाल तिहारो सही जो जराइबे को मिलै काठ ना कण्डी । कीरतिराम को पूत पछार बिजै दसमी को बिजै कर चण्डी ॥ ३२ ॥

(शिवराम कवि)

---

५ वैद्य ।

गलानि कवित्त ।

अगन बचाय शुभ चारो गन नाय अरु उक्ति उपजाय के बिसारयो नाम हरि का । लोभ के अयान में सयान सब भूलि गयो कीबे परयो रचना अधम ऐसो अरि का ।। मोहर रुपैया पैसा कौड़ी को चलावै कौन माँगे तें न मिलै क्यों हूं जातें द्वैक खरिका । सम को कबित्त करि मन में गलानि होत परत छपाइबो छिनार कैसो लरिका ।। ३३ ।।

(अन्य कवि)

त्रिविध शक्ति—सवैया ।

सक्ति कबित्त बनाइबे की जिहि जन्म नछत्र में दीनी बिधातैं। काव्य की रीति सिखै सु कबीन तें देखे सुनै बहु लोक की बातैं।। दास जू जामे एकत्र ये तीन बनै कविता मन रोचक तातैं । एक बिना न चलै रथ जैसे धुरन्धर सूत की चक्र निपातैं ।।३४।।

(काव्य निर्णय)

कबि रीति शक्ति—दोहा ।

केशव तीनों लोक में त्रिबिध कबिन के राइ ।
मति पुनि तीन प्रकार की बरनत सब सुख पाइ ।।३५।।
उत्तम मध्यम अधम कवि उत्तम हरि रस लीन
मध्यम भाषत मानुखनि दोषनि अधम अधीन ।।३६।।
सांची बातनि बर्णहीं झूठी बरनें बानि ।
एकनि बरनै नियम करि कबिमति त्रिबिध बखानि ।।३७।।

(कबि प्रिया)

इति ।

विचित्रोपदेश

अथवा

(भड़ौआसंग्रह)

प्रथमखण्ड

मङ्गलाचरण–दोहा ।

करम भरम के बस निरखि जगके विविध चरित्र ।
करि प्रणाम प्रभु को करत संग्रह चित्र बिचित्र ॥

कवित्त

गृहिन दरिद्र गृहत्यागिन बिभूति दीनी पापिन प्रमोद पुन्यवन्तन छलो गयो । गहन ग्रहेश कियो सनि को सुचित लघु व्यालन अनन्द सेस भरन दलो गयो ॥ फेरन फेरावत गुनीजन को द्वार २ गुन तें बिहीन ताहि बैठक भलो दयो । कौन कौन चूक तेरी कहौं एक आनन तें नाम चतुरानन पै चूकतै चलो गयो ॥ २ ॥

कोरी औ चमार चिरीमार को जु यार कर प्यार कर सदना सुपच मनभाए हैं । छिपिया कोहार नाऊ दाऊ कै सुदामैं टेरयो गिद्ध के अगाऊ ह्वैके जाय गुनगाए हैं ॥ घासीराम राजी ह्वै विदुर घर भाजी खाई पाजी भिलनी के बैर जूठे मुंह नाए हैं । कहियो कहां लो कलिकाल के अन्देसे ऐसे नोचरंगी ठाकुर ठेकाने होत आए हैं ॥ ३ ॥

सवैया

गढ़लंक बिभीषन को जो दयो तौ निसंक ह्वै भेद बताइबे को। गनिका जो तरी कर टेकि रही हरिनाम सुवा के पढ़ाइबे को। अरि बिप्र सुदामा को दीने महाधन दास प्रतिज्ञा बढ़ाइबे को। बिन काज के दीन पै दाया करै तब जानिये दानी कहाइबे को ॥ ४ ॥

काबुल जाय कै मेवा रचे ब्रजमण्डली आय करील लगाये। मेवा तजे दुरजोधन के घर सेबरी के गृह जूठन खाये ॥ कूबरी को पटरानी कियो तजि राधिका को बट द्वारिका धाये। ठाकुर को मत कोऊ कहो सदा ठाकुर चूकतही चले आये ॥५॥

जाट जोलाहा जुरे दरजी मरजी में रहैं चिक चोर चमारो। दीनन की सुधि दीनी बिसारि सु तादिन तें नहीं कीन गोहारो ॥ को सिवलाल की बातें सुनै इनहीं को रहै दिन रात अखारो। एते बड़े करुनाकर को इन पाजिन ने दरबार बिगारो ॥६॥

कुण्डलिया

कारो जमुना जल सदा चाहत हौ घनस्याम।
बिहरत पुंज तमाल के कारे कुंजन ठाम ॥
कारे कुंजन ठाम कामरी कारी धारे।
मोरपंखा सिर धरे करे कच कुञ्चित कारे ॥
बरनै दीनदयाल रँग्यो रँग बिषय बिकारो।
स्याम राखिये संग अहै मन मेरो कारो ॥ ७ ॥

कलियुग–कबित्त

क्रूर भये कुँवर मंजूर भये मालकार सूर भये गुपुत असूर भये जबरे। दाता भये कृपन अदाता कहैं दाता हम धनी भये

निधनी निधन भये गबरे ।। साचन की बात ना प्रत्यात कोऊ जग माँझ राजदरबारन बोलैये लोग लवरे । भनत प्रवीन अब छीन भई हिम्मति सो कलियुग अदल बदल डारे सबरे ॥८॥

कुण्डलिया

पण्डित मत्सरता भरे भूप भरे अभिमान ।
और जीव या जगत के मूरख महा अजान ।।
मूरख महा अजान देखि के संकट सहिये ।
छन्द प्रबन्ध कबित्त काव्य रस कासों कहिये ।।
वृद्ध भई मन माहिं मधुरबानी गुन मण्डित ।
अपने मन कें मारि मैान धरि बैठत पण्डित ।। ९ ।।

कवित्त

गुन को पूछै कोऊ औगुन की बात पूछै कहा भये। दई कलियुग यों खरानो है । पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्ठन में डार देत चुगल चवाइन को मान ठहरानो है ।। कादर कहत जासों कछु कहिबे को नाहिं जगत की रीति देखि चुप मनमानो है । खोलि देखो हियो सब भांतिन सों भांति भांति गुन ना हेरानो गुन गाहक हेरानो है ।। १० ।।

सूरताई आँधरे में दृढ़ताई पाहन में नासिका अनालि मध्य मैान रही हाट मै । धर्म्म रह्यो पोथिन बड़ाई रही वृच्छन बँधेज परयों पाँतिन में पानी रह्यो घाट मै ।। यह कलिकाल ने बिहाल कियो सब जग नायक सुकबि कैसी बनी है कुठाट मै । रज रही पंथन रजाई रही सीतकाल राई रही राई में रनाई रही भाट मै ।। ११ ।।

देखे गनिका के मन काके ना अनन्द होत सन्तगन देखे हिये आग सी बरत है । निन्दक नकलवाले साले साल ओढ़

बैठें पण्डित प्रबीन सबै ठारे में ठरत हैं ॥ कहै कवि तोष जग ताही को सपूत कहै छल बल करि पर सम्पति हरत हैं । भले अनभल अनभले भले ठहरात कलि के कुचाल कछू जानि ना परत हैं ॥ १३ ॥

बाने मरदाने के हेराने हैं न हेरे मिलैं चेरे मिलें काम के जनाने से वद्दर हैं। ताने जे तनत तेऊ चलत-उताने सब सम्पति बिकानी पै मचावत गदर हैं ॥ आइना से आइन कनून लिये ऐंठे डोलैं बेद औ पुरान किये डारत बदर है । जुगलकिसोर गई सबही भलाई भाई अब के जमाने में नदाने को कदर है ॥

दम्भी दगाबाजन की बाढ़ी है अधिक थाप ज्ञानी गुरु लोग के बचन बेप्रमाना है । पूछत न कोऊ कबि कोविद प्रवीनन को नकलो हरामिन को हाजिर खजाना है ॥ ठाकुर कहत कलि काल को प्रभाव देखो झूठी बातें कहि २ जनम सिराना है । बड़े २ सूवा तेऊ जात पाप डूबा यह देख जिय ऊबा की अजूबा कारखाना है ॥ १४ ॥

पण्डित कविन्दन को बात है न कूरन की कथक कलांवत फिरत तान गाने को । कहत उदेस भरैं उदर कपूत सबै तीके तेगबाहिन को चना ना चबाने को ॥ आदर करत वाहियात के बकैयन को तजि के पुरान बेद धरम के बाने को । जुरि के गँवार बैठ चौरहे किलकि देत आल्हा के गवैया को रुपैया रोज खाने को ॥ १५ ॥

राजन की नीति गई मीतन की प्रीति गई नारिन प्रतीत गई जार जिय भायो है । सिष्यन को भाव गयो पञ्चन को न्याव गयो साच को प्रभाव गयो झूठहि सोहायो है ॥ मेघन की बृष्टि गई भूमि सबी नष्ट भई सृष्टि पै सकल बिपरीति दरसायो है । कीजिये सहाय हे कृपाकर गोबिन्दलाल कठिन कराल कलि-काल बनि आयो है ॥ १६ ॥

कौन को सुनाइये कवित्त बित्त दाता कौन गनिका के गरज गरूरता सम्बै रहे। साहजादे शाहजादे सूवा सरदारजादे कायथ सिपाहजादे राह २ र्‍वै रहे ॥ सिवराम कहत अमीरजादे मीरजादे पीर औ वजीरजादे छल छन्द छ्वै रहै। मुगल पठानजादे राव उमरावजादे सबै जादे जग के हरामजादे ह्वै रहे ॥ १७ ॥

पाय अधिकार को करैं न उपकार कछू पथ परमारथ के पूरे वटपार हैं। सुर्न्य हिरदै के हठी नीरस निहायत हैं पुन्य तरु काटिवे को कठिन कुठार हैं। भने भुवनेस काम परे खुलि जात खासे अजस के भाजन बनाये करतार हैं। उठि गये हिम्मति उदार सरदार अब रहि गये लोभी लण्ठ लम्पट लबार हैं १८

छमी भये छोभी और लोभी भये कबिजन देव को सुजस छोड़ि मनु जस गायो है। सूम भये स्वामी पुनि सेवक हरामी भये कामी भए पण्डित न मन ठहरायो है ॥ हीन भए धर्मी औ अधर्मी सो प्रबीन भए निधन कुलीन अकुलीन धन पायो है। कीजिये सहाय श्रीकृपाल जू गोपाललाल कठिन कराल कलिकाल बनि आयो है ॥ १९ ॥

कानोगोय चौधरी दरोगा औ दिवान सबै मालमारि खाने कोर कागज बनायो है फौजदार नायब मोसाहब अकोर लै लै झूठो करैं सांचो पुनि सांच को झुठायो है ॥ आठो जाम जागे द्रव्य लागि आनपागे मसिलासा साथ राखे लिख चौगुनो चढ़ायो है। कीजिये सहाय श्रीगुनाकर गोपाललाल कठिन कराल कलिकाल बनि आयो है ॥ २० ॥

चारो ओर जोर सोर सुनि के अदत्तन की भूलि सो गयौ है बिध दातन को गढ़िवो। भूमि भूमि भूपति गएई सुनै ठौर २ बिरले देखात रजपूती रन चढ़िबो ॥ कबि सरदार सूम सूरत मनायबे ते अतिही भलो है रघुबीर नाम रढ़िवो। अब के जमाने

के चरित्रन को देखि २ छूटि गयो चित्त ते कबित्तन को पढ़िबो ॥ २१ ॥

साहू भए सूमड़ा सुबादशाह हीन हद्द खग्गे खगरेटन खुलासा बेच खाई है । भोले भए भूपति कनौड़े धनीवन्त सब मूरख महन्थ अन्ध देत ना दिखाई है ॥ कायथ कपूत भए क्रूर रजपूत धूत बनियां बरूथ पेखि पुंज पछताई है । काके ढिग जाई काहि कबित सुनाई भाई अब कबिताई रही फजिहतिताई है ॥ २२ ॥

सवैया ।

कौड़ी को कोड़ी से दांत निपोरै बखील बड़े दमड़ान के चाहक । जाहि तें लेत उधार अभागे वृथा झगरो करैं ताहि सो नाहक ॥ बाहिर आवत ऐंड भरे औ परोसिन के छतियान के दाहक । आज औ काल्ह के देखे अमी सबे हैं पराइये पाग के गाहक ॥ २३ ॥

दोहा ।

हृदय कपट बहु भेष धरि बचन कहैं गढ़ि छोलि ।
कलि के लोग मयूर सम क्यों मिलिये हिय खोलि ॥२४॥
जिते पदारथ जीव जग उलटेई दरसात ।
यह कलिकाल कराल की महिमा कही न जात ॥ २५ ॥

सिद्ध ।

दम्भ की दुलीची डारि बैठत हैं ब्रह्म ह्वैके द्विज दोष जपै और कछु ना सोहात है । परधन लूटिबे को ज्ञानमान ध्यानमान आसन के हेत हरखत गात गात है ॥ परम पखण्ड करे धर्म को न लेस जामे सेस ह्वैके बैठत जपत उतपात है । कपट के साला पर झूठी बाग छाला पर गोमुखी बिसाला पर माला पर मात है ॥ २६ ॥

ब्राह्मण—छप्पै।

बामन को लै नाम जगत में डोलत पैंड़े।
श्रुति मारग को त्यागि चलत जा्न के पैंड़े॥
परपतिनी आधार सार संसार बखाने।
आप सरिस नहीं और जगत में पण्डित माने॥
पल असन पान मदिरा करै कलुखी हरिहरनाथ को।
एते चरित्र पूरित तऊ रहत उठाये माथ को॥ २७॥

पुजारी—कुण्डलिया।

तुलसी रामहुलास लखि हरिमन्दिर में बैठि।
चरन चापिबे मिस तुरत आई चेली पैठि॥
आई चेली पैठि धाय चरनोदक दीनै।
बालभोग दै हाथ तुरत बातन मन लीनै॥
कह सित्रराम कवित्त देखि वह हिय में हुलसी।
लीनो प्रेम लगाय हाथ में दैके तुलसी॥ २८॥

कबिरा।

रहत अरूझा मन बूझा परदोखन में पूजा समै संगम न दूजा ठहरात है। बेलो छैक दूध चीनी केला को मिलाय खात चेला करिबे में सदा चौगुनो लखात है॥ छापै भुज दण्ड सदा पाप प्रचण्ड महा लोभ को उमण्ड औ पखण्ड भरो गात है। पागे पर बाला पर छोकरे रिजाला पर मोहै मृगछाला पर माला पर मात है॥ २९॥

क्षत्री—छप्पै।

अति मूरख निरलज्ज आलसी बुद्धि बिहीने।
विषय लीन बञ्चक अधीन जस तेज मलीने॥
राजा बाबू सिंह बहादुर पदवी लैके।

अपकीरति की छांह लहे दुख औरन दैके ॥
परघात धरम दिन रात को सदा जगत निंदा करत।
पटछत्र धारि छत्री बनत नर तन तें हरिपद चहत ॥

भूपति--सवैया।

खाय के पान विदौरत ओठ हैं बैठि सभा में बने अलबेला। धोती किनारी को सारी सो ओढ़त पेट बढ़ाय किये जस थैला बंसगोपाल बखानत हैं यह भूप कहाय बने फिरि छैला। सान करें बड़ी साहिबी की अरु दान में देत ना एक अधेला ॥३१॥

भूलि न दान करे दमरी रन में न कबौं किरपान चलाइस। पोत गनाय धरै घर में करै झूठिये पञ्चन में फरमाइस ॥ बातें बनाय के नोखी नई बहु जाचक को जियरा भरमाइस। राम कहै न रहै चिर चौकस चीक ने ठाकुरको ठकुराइस ॥ ३२ ॥

द्वार पै दीरघ दांत निपोरे बिराजत हैं बनि भैरो के बाहन। भीतर जाय सभा में लखे तो सरासर सोहत सम्भु के बाहन ॥ पास सलाह करैया लगे रहैं कान हमेस गनेस के बाहन। देवो के बाहन जानि के आये पै गादी पै देख्यो तो सीतलाबाहन ॥ ३३ ॥

पुन्य को पाप सदा समुझै अरु पाप को पुन्य गनै सब काल मै। ज्ञान सों राखे हिये रिपुता औ अज्ञान सों प्रीति करे हर हाल मै ॥ कारे कुरूप कुनामिन को भर जाम्नि हाजिर राखै निराल मै। सील को लेस न आदर को पर फूलो रहै मन मांह भुआल मै ॥ ३४ ॥

काग सो कान कियेई रहै जुग मित्रन में करै हांकि बिछोहा। भेद के काज किते कुटनान को साजे रहै बहु लेन को जोहा ॥ लालच दै भरमाए रहै चिकनी बतियान तें राखत मोहा। तात को जान न देत गनीच रहै परघात में नित्त पचोहा ॥३५॥

हैं जितने कलही कपटी अरु क्रोधी कुनामी कुमारगी भारी। चौकन चूगलीखोर चुहेड़ा चवाई चलाकरु लाबर बारी॥ भावत है जन एते भुआल को पास न जाय सकै निज नारी। छोकरे बारह पांच के मध्य रहैं नितही फरमावरदारी॥ ३६॥

चरचा कुटनीन की नीको लगै भडुआन की खातिर ताजी रहै। रँडियांन की लागै भली बतियां चड़िग्गान की त्यों सिर-ताजी रहै। नहीं जाति है बात गुनी की सुनी कबि कोविद तें इतराजी रहै। निस बासर पास जो पाजी रहै तो महीप या काल को राजी रहै॥ ३७॥

कबि कोविद एक से एक गुनी सभा चातुरता सों न राजी रहैं। असराफ रईस रफीकन सों न रिफाकत राखत मा जी रहैं॥ महामूढ़ औ मसखरे टालन के दरवाजे सवारियां साजी रहैं। निस बासर पास जो पाजी रहैं तो महीप या काल को राजी रहैं॥ ३८॥

कवित्त।

बारी औ कँहार नाऊ धीमर कुहार काछी खटिक दसौंधी ये हजूर को सोहात हैं। कोल गोंड़ गूजर अहीर तेली नीच सबै पास के रहे तें महा ऊँचे भए जात हैं॥ बुध सेन राजन के निकट हंस बसैं कूकर बिचार कहा गुन अधिकात हैं। दूरही गयन्द बांधे दूर गुनवान ठाढ़े गज औ गुनी को कहूं मोल घटि जात हैं॥ ३९॥

राजा राव राजे बादसाह जे जहान जाने हुकुम न माने हुकुमन तर आने हैं। सूर बीर संगत में सुघर प्रसंगन में रीति रस रंगन में अतिही बखाने हैं॥ स्यामलाल सुकबि जहान में न तोंसे भूप खोजहारे पात पात आज के जमाने हैं॥ हम मर-

दाने जानि बिरद बखाने पर द्वारे चोपदार कहैं साहब जनाने हैं ॥ ४० ॥

गोरे गोरे भुज दण्ड दीरघ बिसाल नैन बदन रसाल जाके सुखमा बखाने हैं । बेनी कबि कहे जाके अजब जलूस सोहै हाजिर हजूर पूर पुहुमी खजाने हैं ॥ ऐसे नर नाहर को देखिबे को चित्त भयो तातें कबि आसपास आनि ठहराने हैं । हम मरदाने जानि बिरद बखाने पर द्वारे चोपदार कहैं साहिब जनाने हैं ॥ ४१ ॥

पाजिन को पृथु से प्रियव्रत से पातुर को भांड़न को भोज से हमेसा मौज कीबे को । कुटनी को करन कलांवत को कल्प-तरु बलि सम भए बहुरूपिन के जीबे को ॥ परम उदार डाँड़ लाखन के भरिबे को दारू को विशेष दाम रात दिन पीबे को । खरची की तंगी है भुआल को सदाहीं एक ईश्वर निमित्त औ कवीश्वर के दीबेको ॥ ४२ ॥

सौख सेर मारिबे को सभा में सुनावैं सदा स्यारहू न मारयो जाय झारी की झरीन को । हाथ में न जाके जोर सेर के उठायबे को जिह्वा तें उठायो करै पुंज सिखरीन को ॥ ग्वाल कबि कहैं श्रीयुधिष्ठिर सो सांचो बनै देत सबही को दम जाम औ घरीन को । बाजे ब जे भूप ऐसे बेसरम होय जात राख लेत हाथी चारो डारत चिरीन को ॥ ४३ ॥

कबि को न मानै औ न ज्ञान गुरुलोगन को हरि को न भक्ति है न दान है भिखारी मै । मानै अहमेव हम आप नर देव मेरी करैं सब सेव ऐसे भूले डौल भारी मै ॥ कहै जुगराज महाधर्म्म को न काज कछू बैठि के समाज बात बकैं ऐड़दारी मै ॥ राजी ना सिपाह औ न जंग की उमाह जहां जस की न चाह ऐसी थूक सरदारी मै ॥ ४४ ॥

कृपिन कँजूस बड़े गुन के मँजूस जेर देहै कननूस राखे

नियत भिखारी मै। दान को न जाने सनमान को न आनै गुनमान को न मानै रहै भार बरदारी मै ॥ ठाकुर कहत भली बुरी को न साचे नैकु रातदिन सदा चित राखै मारा मारी मै। राजी न सिपाह औ न जंग की उमाह जहां जस की न चाह ऐसी थूक सरदारी मै ॥ ४५ ॥

दीवान दम्भीदास।

पाए कामदारी फूट जात नैन चारी पर जात तोंद भारी बकैं अमली सो आम हैं। लौंड़िया पियारी छोड़ देख निज नारी करैं मंगन सो रारी तहां खोवैं खरे दाम हैं ॥ नीच हित-कारी बिना लाभ बैर भारी राजकाज के बिगारी निसिदिन आठो जाम हैं। सबही सो गारी कबिहू सो दवादारो ऐसे निपठ नकाम कामदारन के काम हैं ॥ ४६ ॥

पेशकार पैसालाल—सवैया।

कार बड़ो पेशकार को पाय कै धर्म को लेस मिटावन लागे। ग्वाहन को घुरकी दिखराय कै आपनो ढंग जमावन लागे॥ बैठि समीपही हकिम के तरफैन सों सैन चलावन लागे। मुद्रिका पांच लिये जबहीं तब झूठ को साँच बतावन लागे ४७

मुंशी कसाईलाल—कबित्त।

म्यान सो कलमदान कर तें निकारि तामें स्याही जल बिष मै बुझाई डार डाग है चारु युक्ति जौहर जगावत सनेह संग अकिल अनेक तामे सिकिल सुढार है ॥ जुगुलकिशोर चलै कागद धरा पै धाय मारै ना दया को नेकु लागे वारपार है। पाय कै गंवार गाइ साफ करै साइत में मुनसी कसाई की कलम तरवार है ॥ ४८ ॥

दारोगा दुष्टदेवसिंह—सवैया।

बेकस सीधे सतोगुनियां के गले पर फेरें कराल छुरे हैं। ख्याल करै न हलाल हराम को कागद कोर पै जाल उरे हैं॥ क्या भुवनेस कहै तिनको हरजाई हरीफ कमाल जुरे हैं। पाहुन द्वै दिन के दुनियां बिच ऐगुनियां के अमाल बुरे हैं॥ ४६॥

दच्छ महादुराचार में हैं परतच्छ लखाई नहीं परते हैं। हैं मगमच्छ बदी नदी के करैं भच्छ अभच्छ नहीं डरते हैं॥ क्या भुवनेस कहै तिनको असराफ कहाइबे को मरते हैं। देखिये कैसे अन्याई अलच्छ ह्वै पच्छ अधमियों के करते हैं॥ ५०॥

कवित्त

गरज परे तें कहैं कहा कहते हैं आप कान लाय व्यथा सबही की सुनि लेते हैं। मांगने तें कहत दियावले हैं देते हैं दिया है फेर देंगे औ कहैंगे कर देते हैं॥ कान लाय देते हैं दिलासा अकुलाव मत हंसि देते बनि के खराब कर देते हैं। देने देने कहत तनेने परैं लोगन तें देने को न छांड़ैं फेर पाछे दगा देते हैं॥ ५१॥

देखत के नीके परिनाम बहु आदर के देखत भलाई सदा जीव में जरे रहैं। भेद भेद पूछैं मूछैं देखत न आवै लाज पाप के समूह सिन्धु आंखिन अरे रहैं॥ कादर कहत जे नटीन के तलासिबे को हाट बाटहू में दरबार में खरे रहैं। निन्दा को जु नेम जिने चुगुली अधार परस्वारथ मिटायबे के खोजही परे रहैं॥ ५२॥

धर्म्म के न कर्म्म के कुकर्मिन के मूल मूढ़ महा मतिमन्द रहैं विषय समीर के। हेम कहै हित के नापित के न मित्रन के चित के मलीन हैं अधीन दलगीर के॥ बानी बेद बान के न कलमा

कुरान के न राम रहिमान के न अजमी गम्भीर के। बिप्र के न ईस के न पण्डित कबीस के मु ऐसे कूर बेसहूर गुरु के न पीर के ॥ ५३ ॥

देखत के मोटे भाल चन्दन खरोटे बने बैस के अधोटे कुल उत्तम के जाए हैं। अम्बर अमोल धरैं बचन अडम्बर सो कम्बर के हेत मन जोगिन पै लाए हैं॥ कहै सिवराम पर संपति समेटिवे को मन तें बेचैन जैसे हलाहल खाए हैं। दगा को सरूप दिलदार ह्वै करत बातें सूरतहराम राम काहे को बनाए हैं॥

आपने बनाइबे को और को बिगारिबे को सावधान ह्वै के सीखे द्रोह से हुनर हैं। भूल गए करुनानिधान स्याम मेरे जान जिनको बनायो यह बिश्व की वितर है ॥ ठाकुर कहत पगे सबै मोहमाया मध्य जानत या जीवन को अजय अमर है। हाय इन लोगन को कौन सो उपाय जिने लोक को न डर परलोक को न डर है ॥ ५५ ॥

कुटिल कुढङ्गी हैं कुरङ्गी हैं कुअङ्गी रूप कायर कपूत पूत कुमति कुसङ्गी हैं। कङ्गी हैं कलङ्गी वह पापिन में लंकी यह खल हैं खले सी बैन बोलत दुरङ्गी हैं। भनै भुवनेस भेस भूत सो दिखात जाको मङ्गी हैं मलीन भर्म भूतल में दङ्गी हैं। भङ्गी है अनङ्गी हैं अरङ्गी हैं न रङ्गी बुद्धि दंगी दगाबाज हैं तरङ्गी देह तङ्गी हैं॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

गुन में औगुन खोजहीं हिये न समुझें नीच।
ज्यों जूही के खेत में सूकर खोजत कीच ॥ ५७ ॥
अगर दुष्ट जे जीव हैं सिर तजि अपजस लेत।
सन तन खाल कढ़ाय कै पर तन बन्धन देत ॥ ५८ ॥

दोषहि को उमहे रहत गुन न गहैं खल लोक ।
पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयोधर जोंक ॥ ५९ ॥

जमादार जनानियांजान—कवित्त ।

लच्छनपुरी के सब लच्छन विलोकियत अच्छन में ओट दै बिलच्छन हँस्यो करैं । कोटि कुलटा के भाव, राजत छटा के गन सील अँगना के अँगना के सरस्यो करैं । बसैं बड़े गाँव बीच जुगल जनाना तौन विहँसि बिहँसि मनमानैं बिहँस्यो करैं । हासना करत बड़ी तासना करत प्रीति सासना के माँह जौन आसना कस्यो करैं ॥ ६० ॥

ऊँची चोली चिक्क मिसी दाँतन में बातन में बार बार हेरि हेरि मन मुसुकाने हैं । मुख के न दरस परस मरदूमिन के लै रहैं मुकुर औ अतर अंग साने हैं ॥ बेनी कबि कहै आहि ऊहि में प्रबीन बड़े निपट नकाम कहू काहू के न माने हैं । अबस के खाने जिने कबिन बखाने जिन ऐसे धरे बाने ते जनाने सम जाने हैं ॥ ६१ ॥

महा मेहीं जामा पायजामा चुड़ीदार चुस्त चीरा चारु बाँधे तुर्रा जरी के किनारे हैं । गुलगुल गादी पै परे है पेचवान पीवैं खिजमतगारन तें करत इशारे हैं ॥ बेनी कबि कहैं बने ठने रहैं आठोजाम धरम न चीन्हें लाज सरम बिसारे हैं । खाय बेस खाने आय बैठे खसखाने ऐसे लाखहू जनाने पुरी लच्छना निहारे हैं ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

ऊँची चोली नीच है दावन चौड़ा बन्द ।
तिरछी टोपी देत हैं सोहदन के फरजन्द ॥ ६३ ॥

चमारखां चपरासी—कवित्त ।

ऐंठे से रहत बैन सूधे ना कहत हठ आपनी गहत करै काहू को न पास है । म्याने कद डोल राखे आँख में न सील राखै इनमें असील ते चलत चाल रास है ॥ धन्य यह बाना कबि-राम खूब जाना इनैं जिन पतियाना ते नसाना जग खास है । पावै आठ आना तौहू खाना को उदास फिरै बांधे खपरा से चपरासी चपरास है ॥ ६४ ॥

वकील असभ्य शोभा

अतिही नकारे मदवारे कदवारे छोटे खोटे रिसवारे बिस-वारे बड़े सान के । पहिरत जामा और पाग तामे सामा केती आना के मगैया औ कहैया बेप्रमान के ॥ कविराम कहै जूती चलै चटकाए भटकाए तिनही को जिन पूछत न पान के । जंगला हरामी क्रूर कुटिल कुजाती यारो अमला न होय सबै कंगला जहान के ॥ ६५ ॥

मोहर्रिर मूर्खमिश्र—सवैया ।

बिन भेदन भेद न जाने कछू मति के अनुसार लही सो लही । नहिं वेद पुरान की रीति कछू अनरीति की टेव गही सो गही ॥ समुझाये नहीं समुझै गुरु को गुरु को अपमान लही सो लही । यह तामस ज्ञान अनन्य भनै पुनि मूरख गाँठि गही सो गही ॥ ६६ ॥

चौधरी चुगलचन्द—कवित्त ।

चूक जात जौहरी जवाहिर परख जाने चूक जात पण्डित पढ़ैया वेदचारी के । चूक जात घोड़े के चढ़ैया असवार केते चूक जात चातुर लदैया टाड़ा भारी के ॥ चूक जात मेघ मेज-

राजन के बातन में लेखो चूकि जात है लिखैया लेखधारी के। बान किरबान के घलैया पूरे चूकि जात एक नहीं चूके हैं चुगल * * * * के ॥ ६७ ॥

कपूत कुंअर—सवैया।

बाप ददान की सील न राखत दुर्ज्जन सों नहिं दाप दपेटे। सज्जन सो नहिं सील निबाहत जाचक सो नहिं प्रेम लपेटे॥ द्वार खड़े तिने बात न पूछत भीतर पाय पसारि के लेटे। बिप्र प्रसाद बिचारि कहै बरु बूड़ि मरैं कुल बोरन बेटे॥ ६८॥

छप्पै।

मरै सूम सरदार मरै वह कट्टर टट्टू।
मरै करकसा नारि मरै वह पुरुष निखट्टू॥
बाभन सो मरि जाय हाथ लै मदिरा प्यावै।
पूत वही मरि जाय जु कुल में दाग लगावै॥
वह बेनियाव राजा मरै नींद धड़ाधड़ सोइये।
बैताल कहै विक्रम सुनो एते मरे न रोइये॥ ६९॥

निर्लज्जराय—कबित्त।

बल सो बसाय महा छल सो बसाय महा दल सो बसाय औ बसाय बेभरम सों। सिरी सो बसाय गाजचिरी सो बसाय बड़े टिरी सो बसाय औ बसाय वे धरम सों॥ नीर सो बसाय औ समीर सो बसाय धीर पीर सो बसाय त्यों बसाय बेकरम सों। चोर सो बसाय बटपार सो बसाय इन सब पै बसाय ना बसाय बेसरम सों॥ ७०॥

विश्वासघाती मल्ल।

कञ्जबन मानि मून हंसजन आय फिरैं गन्धबन भृङ्गन को भङ्ग करि डारे तैं। पाके फल जानि सुक पुञ्ज पछताने आय

पाय के बसन्त बात बृथा पात डारे तैं ॥ दूरि तें बिलोकि अरु-नाई अति फूलन की आमिष अहार गिद्ध बायस विडारे तैं। एरे तरु सेमर के सिफत तिहारी कहा आस दै दै पच्छिन नि-रास करि डारे तैं ॥ ७१ ॥

देखत के वृच्छन में दीरघ सुभायमान कीर चल्यो चाखिबे को प्रेम जिय जग्यो है। लाल फल देखि के जटान मड़रान लागे देखत बटोही बहुतेरे डगमग्यो है ॥ गंगकवि फल फूटे सुआ उधरान लखि सबन निरास ह्वै के निज गृह भग्यो है। ऐसो फलहीन वृच्छ भयो बसुधा में यारो सेमर बिसासी बहुतेरन को ठग्यो है ॥ ७२ ॥

बनियांराम--सवैया।

गर्ज परें तें करैं बहु अर्ज परैं पुनि धाय के पाइन में। जी में दया न हया हिय में हठि देत दगा ये कुदाइन में ॥ राम न ऐसो कठोर कहूं हम देखी सुनी है कसाइन में। हैं बनियां बनि आये के साथी न भूलियो बात मिठाइन में ॥

कुण्डलिया।

अगरहरी चंचल चतुर बैठे बीच बजार।
परधन हरिबे के लिये करते रूप हजार ॥
करते रूप हजार कबहुं बैदक फैलावैं।
भाल तिलक गर माल डाल नर को फुसलावैं ॥
कह गिरधर कबिराय रोग में ज्यों सुनबहरी।
देव दिवाला काढ़ि मारि परधन अगरहरी ॥ ७४ ॥

महाकाल मिश्र बैद्य--कबित्त।

बैदक पढ़ो है ना मढ़ो है लोभ लालच में माठा सोंठ धनियाँ पिआवै महा ज़ुर को। बैठे निज द्वार पै बिसाला माला डारि

गरे सौगुनो कसाई तें न माने देव गुरु को ॥ कविराम नहरी बहति वाके गहरी सु बैद अगरहरी हमारो मन मुर को। जाने निज नारी को न भेद धावै नारी हेत धरै जाकी नारी सो सिधारे जमपुर को ॥७५॥

सवैया।

पेट पिराय तो पीठहि टोवत पीठ पिराय तो पाय निहारैं। दै पुरिया पहले विष की पुनि पीछे मरे पर रोग विचारैं॥ बीस रुपैया करें कर फीस न देत जवाब न त्यागत द्वारैं। भाखै प्रधान ये बैद कसाई हैं दैव न मारे तो आपही मारैं॥ ७६ ॥

सूल सुजाक छई लकवा ज्वर पीनस पील को पाव घनेरे। और जलन्दर हू परमेह कहै कविराम कहा लगि हेरे॥ जाके बिलोकत ही ततकाल चहूंदिसि तें दुख आवत घेरे। जा पै दया करि हाथ गहै तिहि माथ गहै जमराज सबेरे॥ ७७ ॥

दाता दरिद्रदास—कवित्त।

चींटी को चलावे को मसा के मुंह आय जाय स्वास के पवन लागे कोसन भगत है। ऐनक लगाए मरू मरू कै निहारे जात अनुपरमान की समानता खगत है॥ बेनी कवि कहै और कहां लों वखान करौं मेरे जान ब्रह्म को विचारवो सुगत है। ऐसे आम दीने दयाराम मनमोद करि जाके आगे सरसों सुमेर सो लगत है॥ ७८ ॥

दया सो न देत दान लया सो न देत हेरे हया सो न देत गए गया सो न देत है। भाई को न देत वाप माई को न देत आपजाई को न देत औ जवाई को न देत है॥ गीत मै न देत बत्तओ किमै न देत बड़ी प्रीति मै न देत सीत घाम सहि लेत है। डाँड़न को देत कि तो भाँड़न को देत राखि राँड़न क देत कि तो गाड़न को देत है॥ ७९ ॥

बाजे सरदार दरबार ऐसे दीसैं दान सन्तन को तूमी औ असन्त पात्र अच्छा है । भाँड़न को भौन औ बनात बदराहिन को साल औ दुसाला तें रिजालन की रच्छा है ।। ज्ञानिन को कम्बर पटम्बर पखण्डिन को भूसा घास खरी लै गऊ को देत भच्छा है । जाहिल जराऊ औ अघोरन को कोरदार पातुर पोशाक देत कविन समच्छा है ।। ८० ।।

सवैया

देखत सूखि गए मथुरामल हौं गयो सूखि लख्यो जबै सूकी । लै के सराफ के हाथ धरयो उन देखत मोमि दिखावत मूकी ।। काहू कह्यो दमरी या छदाम की काहू कह्यो नहि कोड़िहू दूकी । माखन सो पघिलाय चली जब गाल फुलाय सोनार ने फूकी ।। ८१ ।।

साल छ सात की दाल दराय कै साहु कह्यो यह लेहु नई है । फूंक दई लकरी बहुतेरिक साँझ तें आधिक रात लई है ।। खाय लियो अकुताय कै काचही चाकरी चूल्हे निहारि गई है । खोय दियो मोजरा दरबार को दाल दधीच को हाड़ भई है ।।८२।।

घोड़ा गिरयो घर बाहर ही महाराज कहू उठवावन पाऊं । ऐंड़ो परो बिच पैंड़ोई माँझ चले पग एक ना कैसे चलाऊँ ।। होय कँहारन को जु पै आयसु डोली चढ़ाय यहाँ तक लाऊँ । जीन धरौं कि धरौं तुलसी मुख देऊं लगाम कि राम कहाऊं ।।८३।।

चींटी लगी चहूं पायन में अरु माछी लगी औ मछेव लगैयाँ । ऊपर काग कलोल करैं चिलिहया चिचियात फिरै सब ठैयाँ ।। खानन घात लगाए फिरैं अरु गिद्ध सियार की सिद्ध रसैयाँ । घूमत घोड़ा फिरै कविदान को ना कवि लेत न लेतं गोसैयाँ ।। ८४ ।।

सूरज को रथ लागो रह्यो याके आगे भयो कई बेर कन्हैया । लोमस के लरिकाई के खेल की भूलि गयो जग को उपजैया ।।

ऐसो तुरंग मँगाय के भूपति दान को काढ्यो दरिद्र को छैया। झुण्डन काग लगे फिरैं संग मनो यह कागभसुण्ड को भैया॥८५॥

कबित्त

स्यारन की शादी बकवादी स्वान सिकरन गिद्धन की गादी बैठि देखे को कढ़त हैं। होड़ाहोड़ी हार बोटी बोटी बाँटि लेहैं हम ऐसे कहे चीलहन के मण्डप मढ़त हैं॥ गाड़े तें परत सोक साँड़ा परे पायन में सभा में घसत दुरगन्ध सो मढ़त हैं। जीव जन्तु जोर जहां तहां करैं सोर सबै साहिब के घोड़ा आज बाहिर कढ़त हैं॥ ८६॥

कागन को भाग अनुराग सब गीधन को चाहि अंग अंगन में स्यारन सतायो है। पूरो क्रम पुञ्ज सो कलेवर कलित जाको जुरि दस बीस जोधा जोम सो उठायो है॥ कहै मिथिलेस लागे अनुज भसुण्ड कैसो लोहू को न लेस बेस बिधिना बनायो है। दीरघ दिनन को सु जाहिर जहान बीच ऐसो बर बाज कबिराज को बतायो है॥ ८७॥

संगम सों संदली करत मजकूर मेरी पीठ चढ़िबे को कहा हाँके उमहत हौ। चलिहौं न डग भरि कहा सतरात मोपै लैके लोटि जैहौं नेक सीधे ना रहत हौं॥ बाँधे खैहौं दाना और रातिब सकल घास सुन लीजै बात मेरी सूधेही कहत हौं। काहे को करत जोर बात मानि लीजै मोर घरे फिर जैये तोसों नेको मैं चहत हौं॥ ८८॥

साहस कै सुरखा कहत सुनो कवि नैन बूझत हौ मोसों तो कहैया बड़ो काजी मैं। अब या बुढ़ापे में न रावरे भवन जैहौं भूप के तबेले रैहों काहू को न दाजी मैं। हैं तो हम पसू पै डरात अपजसही को साँचिये कहत तोसों हौं तो मर्द गाजी मैं। राजी है महीप तो तू औरे एक बाजी माँग बाजी ह्वैके कहा करों तोसों दगाबाजी मैं॥ ८९॥

डोली पै चढ़ैहो तो खटोली लै उलटी जैहौं जैहौं ना ति-
हारे गेह सोच क : हालिये । छकड़ा चढ़ैहौ,पाय लकड़ा से टूटि
जैहैं ह्वै है अपघात तुमै जैहो फेर खालिये ॥ सन्तन पुकार वार
बार घोड़ डाँटत है गिद्ध स्वान स्यारन की जीविका न घालि-
ये । तोरि हाड़ फोरि पीठ चरसा उड़ाय दीजै चलबे चलाइबे
की चरचा न चालिये ॥ ६० ॥

सात पुस्त बाकी हम पीठ पे चढ़ाये खूब कीनो मरदाई
देखो छोड़ि दोने संग है दृगन तें जोति गई पौरुष थकित भये
दसनन भङ्ग भये कदन के लंक है ॥ कहै कबिलाल बाजा करत
फिराद मोसों माँगत मुकुत द्वार रावरे तुरंग है। जीहों एक
पाख छह मास एक कबिराज कहा ऐते दिन को कसत मोपै
तंग है ॥ ६१ ॥

महिषी–सवैया

लाये हो मोहि दया करि के तो हरी हरी घास खरी भुस
खैहौं । ब्याने पचासक ब्याय चुकी अब भूल नही सपनेहूं बि-
येहौं ॥ हौं महिखासुर तें बड़ी बैस में तो घर जात कलङ्क लगै
हौं । दूध को नाम न लेहु कवीश्वर मूतन तें नदी नार बहैहौं ॥६२॥

कबित्त

दानी कोउ नाहिने गुलाबदानी पीकदानी गोंददानी धनी
शोभा इनहीं में लहे हैं । मानत गुनी को गुन ही में प्रगटत
देखो यातें गुनीजन मन सावधानी गहे हैं ॥ हयदान हैमदान
गजदान भूमिदान सुकबि सुनाये और पुरानन में कहे हैं । अब
बो कलमदान जुजदान जामदान खानदान पानदान कहिबे को
रहे हैं ॥ ६३ ॥

पौर के केवार देत घरे सबै गार देत साधुन को दोस देत
प्रीति ना चहत हैं । मंगन को ज्वाब देत बात कहे रोय देत

लेत देत भांज देत ऐसे निबहत हैं ॥ बागेहू के बन्द देत बारन की गांठ देत पर्दन के काछ देत काजई करत हैं। ऐते पै कहत सबै लाला कछू देत नाहि लाला जू तो आठोजाम देतई रहत हैं ॥ ६४ ॥

एरी मेरी बीर कन्त कौन के कमान जाहि राजन की मति पै न चलत उपाउरी। तन दुति छीन भई मनुआं मलीन भयो मनसा बिकल कल करत नबाउरी ॥ ठाकुर कहत या जहान पै जरब फैली भई मति मैली कछू जतन बताउरी। खैबे काजे सौंह राखी कीबे काजे पाप राख्यो लीबे काजे अपजस दीबे काजे लाउरी ॥६५॥

सूमसागरसिंह।

सूम पतिनी सो कहै सुन सपने की बात अकथ कहानी रात बरसत हारो तो। चानी में खरो तो जिमी गाड़ि के धरो तो ताहि मन में बिचारि खोदि हाथ को निकारो तो ॥ कहैं कवि-राम कवि आयो एक ताही समै कवित पढ़ोतो हौं तो दीबो अनुसारो तो। होतो कुल दाग बड़े जेठन के भाग अरे जागि ना परो तो मै रुपैया दिये डारो तो ॥ ६६ ॥

देखत को दरदरो दिल को दरद हरै परम उदार लाख लाखन को रातो तौ। दैबे को उधार सरदार दार सौंपै देव दूनी करिबे को वाको व्याज को बिचारो तौ ॥ भनत सुवेस बैठि सूम कहै सूमिनि सों आज सपने में मै कलङ्क उर धारो तौ। आग सी लगी है भाग बच्यो बाल बच्चन के जागि ना परो तो मैं रुपैया दिये डारो तौ ॥ ६७ ॥

दाताघर होती तौ कदर तेरी जानी जाती आई है भले घर बधाई बजवाव री। खाने तहखानन में आनि के बसेरो लेहु होहु ना उदास चित चौगुनी बढ़ाव री ॥ खैहों नां खियैहों मरिजैहों तो सिखाय जैहों यहै पूत नातिन को आपनो सुभाव

री। दमरी न दैहैं कबौं जाने मैं भिखारिन को सूम कहै सम्मति सो बैठी गीत गाव री ॥ ६८ ॥

तियन पै ढूकै औ अथाई बैठि नूकै भूखे मानुष पै भूकै करै चाकर पै खिस्स। आरसी निहारै पाफ पेचन सँवारै दृग अञ्जन लगावै नित मल दांत मिस्स ॥ पाप कोऊ मांगे तोऊ बाप मरि जात वाको देत दमरी ना अरु काढ़ देत खिस्स। गद्दी पै गरूर भरे सटक सड़ाका मारे डोल दार गुम्बज अवाजदार फिस्स६६

सूम के सुखौने बीच चिरिया चलाई चोंच आप उड़िगई प्रान वाहू के उड़ाय के। करि हाय हाय गिरि पर्‌यो मुख बाय बात कही न सकाय बहू नाक दाब्यो आय के ॥ वाके घर पर्‌यो सोर कागा सुने करैं रोर परे दगाबाज नहीं गयो कछू खाय के। धान धर लीनो और महुआ सहेज लीनो उरद परेख्यो तब पैठो प्रान आय के ॥१००॥

जामे दो अधेली चार पावली दुअन्नी आठ तामे पुनि आना लखो सोरह समात है बतिस अधन्नी जामें चैासठ पयन्नी होत एक सो अठाइस सु धेला गुन मात है ॥ जुग सत छप्पन छदाम जामे देखियत दमरी सु पांच सत बारह लखात है। कठिन समै या कलिकाल की कुटिल दैया सलग रुपैया मैया का पै दियो जात है ॥ १०१ ॥

छेद हैं हजारन हजारन लगी हैं पाती मैले गन्दे चीकटे सु चीथरा लपेटे हैं। कारो कारी हाँड़ी फूटे पुरवा पतैावा दोना आपने सिराने बड़े जतन समेटे हैं ॥ अम्बिकाप्रसाद कहै इन सों बचावै ईस बाढ़े बार भालू कैसे धूर में घुरेटे हैं। गाड्यो धन जमी में बिछाय राखो तापै खाट तापै रहैं लेटे ऐसे सूमन के बेटे हैं ॥ १०२ ॥

दान बिन दरब निदान ठहरान कौन ज्ञान बिन जस अप-ज़स करि करिगे। कबिराय सन्तति सुभाय सुने सूमन के धरम

विहीन धन धरा धरि धरिगे ॥ काम आये काहू के न दाम दुहूं दीनन के धाम गाड़े गाड़े सब गथ गरि गरिगे। वोरि बोरि बिरद बड़ाई बेसहूर केते जोरि जोरि कृपिनकरोर मरिमरिगे॥

पढ़न न देत हैं कबित्त बाजे भावन के बाजे चुपचाप सुनि नीम सो अचै रहैं। बाजे दस बीस गूढ़ पूछ कूसकूटन के मूढ़ सत साखिन की चरचा मचै रहैं॥ बाजे अपसोस करैं बाजे रहि रोस धरैं बाजे दै भरोस दरबार में नचै रहैं। बाजे सूम सूका देत पाथर लगाय छातीबाजे सूम साहब सोपारियै अचै रहैं ॥१०४॥

पण्डितन काज सीखे भागवत ज्ञान गीता श्रोता हेत सीखे सार बेदन को बाँचिबो। कविन के काज सीखे पिङ्गलाभरन और दोहा गाहा चौपाई कबित्तन को साँचिबो॥ कलावन्त काज़े राग ताल को क्रम करैं आप दरसावैं सबै रागन को जाँचिबो दीबे काज महासूम इतने कसब जानें कसर रही है इम तातार्थेई नाँचिबो ॥१०५॥

दोहरा कबित्त बेत गजल सुनावै केतो उक्ति उपजावै ताहि देत ना *** है। पाहुनो जो आवै ताहि पानिहू न देत सब जानत जहान यह कुल की रसम है। मोहर रुपैया कहो कौड़ी को चलावै कौन बाहर न जान पावै भौन की भसम है। लेइबे को होय तो हजारन पै हाथ फिरै सूम सरदारन को देबै की कसम है ॥१०६॥

ऐसे ऐसे सूमड़ा प्रगट भए कलि बीच देवें ना दियावें दुखी रहत परोस हैं सुने ना सुनावैं दुख दीनता की बात कछू निपट अजान ह्वैके बैठत खमोस हैं॥ कहत नचीज चीज सेत सेत एक सार द्वार देखे मंगन करत बड़े रोस हैं सैल के चलत सोर होत सब देसन में दाना रहतेई मरैं बाजी कोस कोस हैं॥१०७॥

आज काल परसों घरी पल बरस जाकी औधि की न आस

रिखि लोमस लहत हैं सनमुख भिच्छुक बिलोकि बिवरन होत हाथ जोरि सीस नाय पायन परत हैं ॥ स्वादहीन सुन्दर अना-रून के फल ऐसे बने ठने रहै पै न कबि सरहत हैं सूमन की सरिता बिलोकि अवगाहियत देत सठ नाहीं अरु नाहीं ना कहत हैं ॥१०८॥

कबित्त

बारन के आरथी को बादन मनोरथ कै बाजी के मँगैया बाजी आवत निकेत हैं। गाहक कनकपत्र पावै ना कनकपत्र रूप के लेवैया तें छपाय रूप लेत हैं ॥ पय सो चहत ताहि पयसो लगावै बहु लोभी कवड़ी न लाभ कोड़ी लाहु लेत हैं। गोकुल बिलोकि सूम मंगन विहीनपट मांगे जो बखानि तऊ द्वार पट देत हैं ॥१०९॥

काहू एक दासै कहूं साहिब के आसे में कितेक दिन बीते रीते सब भांति भल है। बिथा जो बिनै तें करै उतर यहै सो लहै सेबा फल ह्वै ही रहै यामें नहीं चल है ॥ एक दिन हास-हित आयो प्रभु पास तन राखो ना पुरानो बास कोऊ एक थल है। करत प्रनाम सो बिहँसि बोले यह कहा कह्यो कर जोरि ईस सेबाही को फल है ॥११०॥

काको यह घोरा कह्यो जाही को मैं चाकर हैां कौन को तू चाकर है जाको यह घोरा है। नाम क्यों न लेत कह्यो तूही क्यों न पूछे जाय लिख दै लिखत टूटे लेखनी को ठोरा है ॥ एक दिना नाम लियो अन्न आधीरात मिल्यो सो भी गिरयो स्वान खायो निपट निहोरा है। नाम तो दिवान जू के लिये कई वर्ष भए सुने नाम कानन में परयो जात खोड़ा है ॥१११॥

देवता को सुर औ असुर कहैं दानव को दाई को सुधाय दार पैतियै लहत है। दर्पन को आरसी त्यों दाख को मोनका

कहै दास को खवास आम खास बिचरत है ॥ देबी को भवानी और देहरा को मठ सदा याही बिधि घासीराम रीति आचरत है । दाना को चबेना दीपमाला को चिरागजाल दैवे के डरन कबौं ददा ना कहत है ॥११२॥

बाँधे द्वार काकरी चतुर चित्त का करी सो उमर बृथा करी न राम की कथा करी। पाप को पिनाक री न जाने नाक नाकरी सो हारिल की नाकरी निरन्तरहू ना करी ।। ऐसी सूमता करी न कोऊ समता करी सुबेनी कविता करी प्रकासता सता करी। न देव अरचा करी न ज्ञान चरचा करी न दीन पै दया करी न बाप की गया करी ।।११३।।

तेरे चलाये चल्यो घर तें डरप्यो नहिं नीर समीर औधूपै। मान्यो मैं तोहि हिये हित कै इठ तेरी सो मांग्यो हहा करि भूपै।। ऐसो सखा सुकदेव सुलोभ है तोरि सनेह तें सैारि स रूपै। मेरी बिदाई के बार फटीक ह्वै जाइ मिल्यो नृपसिंह अनूपै।११४।

पाय-बिहीन के पाय पलोट्यो अकेले ह्वै जाय घने बन रोयो। आरसी आँधरे आगे धर्‌यो बहिरे सो मतो करि उत्तर जोयो ॥ ऊसर में बरस्यो बहु बारि पखान के ऊपर पंकज बोयो। दास बृथा जिन साहिब सूम की सेवन में अपनो दिन खोयो ।।११५।।

वाही के आँगन वाही के भागन एक बिरोबिस को उठि जाग्यो। सूढता मूल सठाई के साखन पाय के पातन सो अनुराग्यो। सींच्यो कुमन्त्र के मन्त्र सों मालिन सो सुख देव जहान में जाग्यो फूल्यो फसाद के फूलन सों फिर तामें फजीहत को फल लाग्यो ।।११६॥

खेत गुरू उपरोहित को हम काढ़ि लियो निज बाप कों दीनो । और चचा सों बढ़ाय कै बैर जेठंस लियो धन बाँटि न दीनो ॥ पण्डित केते पुरान पढ़या गए तजि द्वार जो मोकह

चीनो । सो अब संगम झूठी कबित्त बनाय चहै हम सों जिमी लीनो ॥११७॥

जल पीवै तो पीवै न खावै कछू जिहि चित्त नहीं अभि- लाषिबे हैं । बर बित्त की बातें कछू ना करै मनहूं तें कछू नहीं भाखिबे हैं ॥ नित नित्त कबित्त करै उसकी जेहि प्रेम सुधा रस चाखिबे हैं कहूं कोऊ जो ऐसो मिलै कबि एक सु तो हमहूं कहँ राखिबे हैं ॥११८॥

ऐसी कुसाइति में रच्यो मुण्डन भीतर बाहर होत बिखादा । त्यार कर्‌यो जेवनार जबै तब कूकर कूद पर्‌यो दरमादा ॥ औरन को दियो एक छदाम ना मेरहू बेर लगाई सवादा । छूरा उठा- वत छींक परी पगरैतिन चैाक पै बैठत ** ॥११६॥

बिवाह

भद्रन में फलदान चढ़े उत पञ्चक में मड़वा गए छाये । भूतन आए लिए अगवानी पिसाचन द्वार को चार कराये ॥ किञ्चिन सों बर की परी भाँवरी भैान चुरैलन भात बनाये । सुक्र सनी- चर सो भयो सामध दाइज मांह दरिद्र को पाये ॥

धोई सी चूनरी रूई सी कंचुकी तैसो सिंधोरो सेनूर ना चोखा । धैां कब को लहँगा परालाबन पायो पर्‌यो कहूँ ताज भरोखा ॥ चूरी परै कर तें सरकी तरकी चरकी सब बात में धोखा । नेगी कहैं हम आज लख्यो यह सूम अतीम चढ़ाव अनोखा ॥१२०॥

, आगि लगै जरि जाँय हजारन लाखन जाँय नरेस के डांड़े ! एक ना दाना परै कबैां भूलि के गाई के पेट गोसाईं के मांड़े ॥ देन की बेर न खोलत ओठ है लेन को बोलत हैं भले चाँड़े । सूम अतीम तनै फिरै भांवरी धैां मड़नी मड़ए बिच मांड़े ॥१२२॥

कवित्त

सेहरा छदाम दै बनायो सीस काज धेला खरचि सजाई फौज नौबत निसाना की। चार दमरी के तेल चौसठ चिराग बारे दमरी में आतस छुड़ाई आसमाना की। दमरी में दायज दमाद दै निहाल कीने आकरे अधेला माफ साज सजी खाना की॥ खरच फजूल को निहारि गमगीन बैठे सोटरा के सैयद की सादी आध आना की॥ १२२॥

॥ दोहा ॥

सूम असुर अरु मुगध तिय जुगल अचल ब्रत आहि।
दोउन के मुख ते सदा कढ़त नाहिये नाहि ॥१२३॥

श्राद्ध सवैया

दाम की दार छदाम को चाउर घीव छुवै आँगुरी दूर दिखायो। टोनो सो नोन धरयो कछु आनि सबै तरकारी को नांव गनायो॥ बाँभन को ना दियो दछिना अपनो दुख आनि अनेक सुनायो। भूपति आज सराध कियो सो भलो बिधि सों पुरुषा फुसलायो॥ १२४॥

बेदी सुंठौर सुधारयो नहीं अरु अच्छत धूप न चन्दन जोए। कान्चोई पाक उतारि लियो कछू देर भई नहीं चाउर टोए॥ बाँभन को दिये एक छदाम ना मारि केवार अनन्द सों सोए। भूपति सूम को देखि सराध घड़ी भर पित्तर बैठि के रोए॥ १२५॥

पञ्च पाखण्डी पण्डित

कानि तजैं अपने कुल की तुरफैन सों लीवे को सान चलावैं। एकहि देत दिलासा प्रसन्न ह्वै एक सों मोटरी लै घर आवैं॥ हैं परमेश्वर पञ्चन में दया नेक नहीं तिनको उर लावैं। नर्क परैं तिनके पुरुषा परपंच करैं अरु पंच कहावैं॥ १२६॥

कुकर्मी कवि

दोहा—छन्द रीति नहि जानई नहिं साहित को ज्ञान।
निज इच्छित कबिता करै सो कवि अधम प्रमान॥
क्रोध बिबस बातल सदा परबनिता-रति प्रीति।
ऐसे कवि नृप के सभा रहत अजीत अभीत॥ १२८॥
मूरखता अरु कुटिलता अरु बातलता क्रोध।
इनके लिखत उदाहरण पाठक लैहैं सोध॥ १२६॥

सवैया

गूढ़ अगूढ न जानत मूढ़ बतावत है जग में कवि एकै। दूखन के नहिं आवत भूखन दोख लगावत औरै अनेकै॥ आपनी भूल बिचारै नहीं अरु है परनिन्दक बुद्धि बिबेकै। ऐसे हैं*** चेत नहीं चित चूतर चोट लगै सिर सेकै॥

परतीति न मानत कौनहुं की औचके से रहैं सबही तें नितै। चलि जात भले ढिग ढीठ भए अति चंचल चारिहु ओर चितै॥ बृज बोलत है फिरि कै फिरि कै हम सो अब को जग जोव जितै। उठि भोर सों दोख अपावन हेरत काग से हैं कवि कूर किते॥ १४०॥

कवित्त

चलत निहारैं चुरमा की ढेर भारै घृत कूपा को बिगारैं मनो जग के जगाती हैं। खात हैं कचरकूट बोलत असंक झूठ लागत हैं मानो राहु केतु के सँघाती हैं॥ ऐसे महापापी उत-पाती हैं जहान बीच खाय के पचायो करैं औरन की थाती हैं। आहन तें पाहन तें सीतला के बाहन तें काठहू ते कठिन कठोर सूरघाती हैं॥१४१॥

बाबू देत सैकरो करोरो बादसाह देत लाखों देत राजा राव हाथी घोड़ा सँड़िया। साहु देत सत्तर पचास जमीदार

देत तीस देत फौजदार बीस देत बढ़िया ॥ चौदा देत चौधरी सवाई सात सूम देत पांच देत कानूगोय चार देत डँड़िया । तीन देत तेली सु तमोली हमै एक देत अधम अधेली देत सूका देत *** ॥ १४२ ॥

खात हैं हराम दाम करत हराम काम धाम धाम तिनहीं के अपजस छायँगे । दोजक में जैहैं तब काटि काटि कीरा खैहैं खोपरी के गूद काक ठोरनि उड़ाखैंगे ॥ कहै करनेस करनी को निज पैहै फल रोजा औ निमाज अन्त जम कढ़ि लावैंगे । कबिन के मामिले में करैं जौन खामी तौन नमकहरामी मरैं कफ्फन न पावैंगे ॥ १४३ ॥

डूंढ़े डंड़े पाखन पै बैठि के बिलैया रोवैं सूखे सूखे काटन पै काग कररात है । बृक भालु बाघ सब अटनि में बैठि रहैं मन्दिर में बन्दर औ जम्बुक जँभात हैं ॥ आँगन घमोय लागी आक औ धतूर फूले ठौर ठौर फनि काढ़े फनि फननात है । रासी गई उजरि उजारि सब देस गयो भाँय भाँव माधव को महल भँभात है ॥ १४४ ॥

रात एक जोगिनी सी रोवत कहत बात राजा को बिघन है है होतही परात है । मरि जैहै बाजी गजराजहू बिडरि जैहै जरि जैहै सम्पति अनल को हहात है ॥ मरि जैहै राजा औ समाज सब गरि जैहै धाय धाय गीध काग सीस फोरि खात है । रासी गई उजरि उजारि सब देस गयो भाँय भाँय माधव की महल भँभात है ॥ १४५ ॥

जोमवारे झूमत मतँग मतवारे जैसे आँधरे से ताकत उलूक जैसे भोर को । आठो जाम अधरम अंग अंग छाय रह्यो देखत लगत मुख जैसे महा चोर को ॥ कायथ असल है न चूहरो पुनारो साँचो तन में दया न हया भाखत न जोर को ।
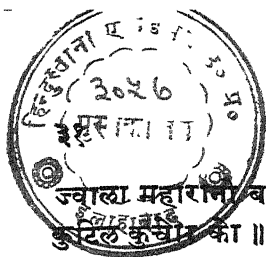
ज्वाला महारानी बानी पूरन करनहारी काला मुख करो कूर कुटिल कुचोर को ॥१४६॥

खाट काटि जात बैद नारी को न थाह पावै धूरा होत तन सीत छायो महा जोर को । गिद्ध औ मसान जुरै खात है मसान जहां रोवति सियारिनि बितीते रात भोर को ॥ मातु सुत सोदर परोसी नारी घरबारी घेरे खाट धारें जल नैनन के कोर की । सारा दारापारन के वासी नर नारिन में माच्यो जोर सोर घोर दुष्ट के अकोर को ॥ १४७ ॥

द्वार पै दइत्तन की फौज देत ताली खड़ी काली अड़ी पौर पै बिसाली रूप जोर को । भौन में मसान के निसान गड़े ठौर ठौर भूत प्रेत जोगिनी खबीस करै रोर को ॥ धाओ धरि लाओ कूर कायथ कुचाली महासोर घोर माचि रह्यो जिन्दन के घोर को । रण्डिका बिलखि बिललाती वाकी पाटी गहे चण्डिका चबात हाड़ दुष्ट के अकोर को ॥

सवैया ।

कोप कै कालिका दौर कै बेगहीं खग्ग तें काटि लै दुष्ट के सीस को । जारि कै गेह को खेह उड़ाय दै दाय दै पैठन हेत खबीस को ॥ राखि लै दास की बात इती दिखराय दै आपनो रूप महीस को । पारि दै कालिमा कीरति पै खल मुण्ड की भट दै बीस गिरीस को ॥ १६६ ॥

संहारिणी सधवा—कवित्त

सासु को बिलोकि सिंहनी सी जमुहाई लेति ससुर को देखि बाघिनी सी मुंह बावती । ननद को देखे नागिनी सी फुफुकारै बैठी देवर को देखे डाकनी सी डरपावती ॥ भने परसन्न मोछै जारती परोसन की खसम को देखे खाँव खाँव

कर धावती । ऐसी करकसा ए कसाइन कुलच्छनी हैं करम के फूटे घर ऐसी नारि आवती ॥ १५० ॥

भूत सी भयावनी भुजंग सी पयावनी औ चूल्हे की सी लावनी ज्यों नील मै रँगाई है । हाथी केसे खाल बूढ़े भालू केसे बाल मनो विधि तें बिधाता आबनूस सी बनाई है ॥ चौदस अमावस सो अधिक लसति स्याम कहै कवि गोबिन्द ज्यों हबसी की जाई है । तवा तिमरावली मसी तें महा कालिमा तू ऐसी रूप सुन्दर कहां ते लूटि लाई है ॥

चूरी वो चुड़ैल बड़ी चंचला चटक बाजें चुटकी बजावैं सासु नन्द के अन्देसा है । कोप किये काँपैत्र सरापै खड़ी खामिद को देवर जेठानी सो रिसानो खोलि केसा है ॥ ससुर सकाय दांत पोसै हाथ मोसै और सियानन्द कहै इनै दारिद गरेसा है । कुटनी कुचालनी कुबुद्धिनी करमहीनो कर्कसा लुगाइन को दुर्दसा हमेसा है ॥ १५१ ॥

व्यभिचारिणी बिधवा

काँच को उतारै चुरी कंचन की धारै प्रेम और प्रां पसारैं दिया बारैं चारि बाती को । अंजन लगावैं उपपति को बुलावैं सैन रूप दरसावैं जैसे महा मदमाती को ॥ रामकबि नारिन मैं बैठि के कलोले करैं सबही सों बोलैं लाज खोलैं ठोकि छाती को । खाय खोवा खांड़ रहैं सबही सों चांड़ सदा कहिवे को रांड़ कान काटैं अहिवाती को ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

इन उन्नीस सभासदन करत काज सब राज ।
मद छाको बिहरै नृपति लै सोहइन को साज ॥ १५३ ॥
जो जाको मन भावई करत न लावै बार ।
भूपति कछु जानै नहीं बिगरो बनो बिचार ॥ १५४ ॥

न्याव-कवित्त

दण्ड के हैं जोग तिन्हैं तनिको न देत दण्ड दण्ड के न जोग तिनै दण्ड दरसत है चाहै जौन जाको कर डारै ना सुनैया कोऊ गाय पर गद्दह चढ़ाय हरसत हैं ।। भनै भुवनेस पर गई है कुयें में भांग काहू को न होस अपसोस सरसत है । जबरा हारेहू मारै मुंह में न रोवै देत अबरा अरज करिबे को तरसत है ॥ १५५ ॥

काढ़े गए कथक बिगारे गए बन्दीजन बारे गए वामन सँघारे गए साधुजन । भारे गुनवारे कवि पण्डित बिसरे गए दान में हकारे गए छोकरे अलोम-तन ॥ संगम समैया राम-नौमी को हवाल सुनो तीसरे उपास पायो चाउर में साने कन। सन्त सब भूखे मरे रोवत महन्थ परे गड़िया गँवार गए खोआ खाय पाय धन ॥ १५६ ॥

नीति, उपदेश, प्रस्ताव और इतिहासविषयक कविता

दोहा

बैद बइदई करि थके सब ग्रन्थन को बाँच ।
बिठउर बैठी जाय के दयाराम की काँच[१] ॥ १ ॥

कवित्त

श्रवन-बिहीन नैनहीन दीन बूढ़ो तन खोटो खरो मानिक को जांचै मोल जाने का । खाटो खारो मीठो तीतो पशु को पिआवे घोर मुख पगुरावै बैठि लज्जत बखाने का ।। सुन्दरि सिंगार करि जावे हिजरा के पास कर चटकावे मटकावे रति माने का । आखर अनूपता को का खर चिपोंग जाने गंगाराम गुन को गंवार पहचाने का ॥ २ ॥

---

१ इस दोहे की ऐतिहासिक घटना कवीकीर्तिकलानिधि की दूसरी कक्षा में बेनी कवि के जीवनचरित्र में लिखी गई है ।

हैं न हम धौवा जो भभाजी भाभी कहि कहि भीत रिया है के कछू व्योंत बगराइये । हैं न हम नौवा औ न ढिमरा कुम्हार काछी धौंढ़े दाहिने है कछू काज करि आइये ॥ भूमि को भरोसो हमैं छूट्यो खेतसिंह दबो निपटे कुठाँवँ तातें तुमको सुनाइये । राजा के तरे की हमें पाइबो कठिन हुतो रानी के तरे की² कहो कैसे करि पाइये ॥ ३ ॥

बेर बेर फेरत हौ बचन निबेरत हौ कहां लगि दीबो करैं और की सी भांवरी । निपट अचेत है कि लाग्यो कहूं प्रेत है कि श्रवन बिचेत कै भई है मति बावरी ॥ गुनिन की बातें तुम सुनी अनसुनी करौ यामें कहा कीरति अकीरति के नांव री । सेवा किये पाथर की मूरति पसीजति पै मानुष की मूरति पसीजति न रावरी ॥ ४ ॥

सवैया

जानत जे हैं सुजान तुम्हें तुम आपने जान गुमान गहे हो । दूध औ पानी जुदे करिबे को जु कोऊ कहै तौ कहा तुम कै हौ ॥ सेत ही रंग मराल बने हौ पै चाल कही जू कहां वह पैहौ । प्यार सो कोऊ कछूह कहै बक हौ बक हौ झख मारत रैहौ ॥ ५ ॥

जोग अजोग को है न बिचार शुमार करै नहीं खास खता की । बाज को बैठक देत बटेरहिं दीपक बारे थली सबिता की ॥ मूरख ऐसी सहूर भरयो परमारथ की गली नेक न ताकी । कही को करै जग मैं जो कहै करो उन्नति यों कविता की ॥६॥

---

२ भूमि ।

कवित्त

चूतिया चलाक चोर चौपट चवाई चुत चौकस चिकित्सक चिबिल्ला औ चमार है। चौसर खेलार सिर चांदुल चपल चित्त चतुर चुहेड़ा चुरगन चिरीमार है॥ चिहुकन चटना चुहुलबाज गंग कहै चुगुल चँडाल चरपरिया चपार है। जुलुम को चाल सब जाल की हवाल जाने चौधरी बखानो जामें चौबिस चकार है॥ ७॥

उमड़त ऐंड़त अड़त फेर अग डग पग-भार विहँसि पहारन मलत है। हरकेस जिनके सहज फूतकार मजबूत पुरहूत के महल हहलत है॥ ऐसे गज हैत छत्रसाल छितिपाल मेघमालन की छबि को छिनै छिन छलत है। मुख चुगुलन के अदेखिन की आंख सूम सारन की छाती छार डारत चलत है॥८॥

छप्पय

कृपिन करन तें कठिन झूठ हरिचन्द बिसेखो।
सुरसरि से अपबित्र लेख विधिना सम पेखो॥
अति कुरूप जिमि मदन महा कायर जिमि पारत।
बचनहीन बलिराज बचन करुवे जु सुधारत।
निरदई इन्द्र मह दास कवि मान बिना जिमि गनपती।
बड़ लोभ सत्य जगदीस को कौन कहै राना सती॥९॥

घाघ की कविता

माघ क ऊखम जेठ क जाड़। पहिले बरखे भरिगे गाड़।
कहै घाघ हम होय विजोगी। कुआँ खोदिके धोइहैं धोबी॥
सावन सुकला सत्तमी जो गरजे अध रात।
तू पिय जैहो मालवा हौं जैहौं गुजरात॥ ११॥
सावन सुकला सत्तमी चंदा उगे तुरन्त।
की जल मिले समुद्र में कि नागरि कूप भरन्त॥ १२॥

सावन सुकला सत्तमी छपि के ऊगे भानु !
तब लगि देव बरीसिहैं जब लगि देव उठानु* ॥ १३ ॥
सावन कृष्ण एकादशी जेतो रोहिनि होय ।
तेतो समया जानियो खरी घसै जनि कोय ॥ १४ ॥
वह बज़ार बनिहार बनि बारा पेटा बैल ।
व्योहर बढ़ः बन बबुर बात सुनो यह छैल ॥ १५ ॥
जो बक्कार बारह बसैं सो पूरन गिरहस्त ।
औरन को सुख दै सदा आप रहै अलमस्त ॥ १६ ॥
सावन पछिवाँ भादों पुरवा आसिन बहै ईसान ।
कातिक कन्ता सींक न डोले गाजें सबै किसान ॥१७॥
गया पेड़ जब बकुला बैठा । गया गेह जब मुड़िया† पैठा ॥
गया राज जहं राजा लोभी । गया खेत जहं जामी गोभी ॥
घर घोड़ा पैदल चलै तीर चलावै बीन ।
थाती धरै दमाद घर जग में भकुआ तीन ॥ १९ ॥
सदा न बाना बुलबुल बोलैं सदा न बाग बहारां ।
सदा न ज्वानी रहती यारो सदा न सोहबत यारां ॥

दोहा

सब सों सब कोई करै की सलाम की राम ।
हित रहीम तब जानिये जा दिन अटकै काम ॥२१॥
बिन मांगे दे दूध बराबर मांगे पर दे पानी ॥
कहै कबिर वे रुधिर बराबर जामें ऐंचातानी ॥ २२ ॥

सवैया

दाख पकी तब चोंचों पक्यो जब बीन बज्यो बहिरो भयो कानो । मैनका आदि मिली तबहीं जब देह तें काम गयो जहि

* कार्तिक शुक्ला एकादशी । † सन्यासी ।

जानो ॥ जैसोई चाहत तैसोई करै जग जाहिर हैं विधि को यह बानो । पारस पायो बराय कहूं तो जहांन तें लोह को लेस हिरानो ॥ २३ ॥

कवित्त

नग अनमोल काहू पामर को हाथ लाग्यो वाने तज्यो पथरी विचारि नदी तीरै को । धूर में घुरैटो वह्यो मग में विचारो परयो सही मार राहिन के पाय के जखीरे को ॥ कहै स्याम सेवक गजादिक के भार परे मनहूं न मैलो भयो बात कहै पीरे की । पै सुजान जौहरी के पाय परनेही हरे हाय वही छतिया छटूक भई हीरे की ॥ २४ ॥

दोहा

जस जारयो सब जगत को भयो अजीरन तोय ।
अपजस की गोला दऊँ ततकाले सुधि होय ॥ २५ ॥

सवैया

केसवदास के भाल लिख्यो विधि रंक को अंक बनाय सँवारयो । धोवै धुवै नहिं छूटो छुटै बहु तीरथ जाय के नीर पखारयो ॥ ह्वै गयो रंक तें राव तबै जब बीर बली नृप नाथ निहारयो । भूलि गयो जग की रचना चतुरानन बाय रह्यो मुख चारयो * ॥ २६ ॥

आज लों तोसों औ मोसों विपत्ति बढ़ी रही प्रीति की रीति सहेली । तो हित झार पहार मझाय के आय के देख्यो

---

* जीवन चरित्र बीरबर पे० २६ में लिखा है कि केशव दास को राजा बीरबर ने इस सवैया के ऊपर छः करोड़ दाम की हुण्डियां बखुश दी थीं । यह केशवदास बड़े कवीश्वर थे राजा इन्द्रजीत ओड़छा के पास रहते थे । किसी काम के लिये बादशाही दरबार में आए थे ।

है भूमि बघेली ॥ श्री हरिनाथ सों मान करै मति मेरी कही यह मानि लै हेली । भेटत हैं रजा रामनरेसहि भेंटि लै री फिरि भेंटहु हेली * ॥ २७ ॥

छप्पय

चकित भंवर रहि गयो गवन नहिं करत कमलतन ।
अहिफनि मनि नहिं लेत तेज नहिं वहत पवन घन ॥
हंस मानसर तज्यौ चक्क चक्की न मिलै अति ।
बहु सुन्दरि पद्मिनी पुरुष न चहै न करै रति ॥
खलभलित सेस कबि गंग भनि रमित तेज रविरथ खस्यो ।
खानानखान बैरम सुअन जि दिन क्रोध करि तँग कस्यो † ॥

कवित्त

श्रुति को सुन्यो ना गान पात्र को दियो ना दान शत्रु की करी ना हान छल बल लाय के । कियो ना परायो काम रसना भज्यो ना राम रस में गही ना बाम हिय लपटाय के ॥ विद्या में करयो ना भ्यास मांगनो गयो निरास बेनी पै करयो ना बास एको पल जाय के । बोधा ने बखानी करी बृथा जिन्द-गानी तातें बानी पछितानी ऐसे डौलन में आय के ॥ २६ ॥

---

* इस सवैया का सविस्तर हाल तो कविकीर्तिकलानिधि की दूसरी कला में लिखा गया है किन्तु इतना यहां पर लिखना अधिक न होगा कि राजा रामचन्द्र बघेला बांधवगढ़ ने हरनाथजी को इस सवैया पर १ लाख रुपैया दिया था । इन्हीं राजा रामचन्द्र बघेला ने मियां तानसेन को एक करोड़ रुपैया दिया था । मन्तखबुल तवारीख़—

† यही छप्पय है जिस पर नौव्वाव खानखाना ने गंग कवि को ३६ लाख रुपया दिया था इसका सविस्तर हाल कविकीर्तिकलानिधि के दूसरी कला में लिखा गया है ।

सवैया

आपने काजन ख्याल जमाइ सदा बड़े भोर महीपति जागे। देखे सुने अपने दृग सों अरु आयसु देत में देर न लागे॥ बात को होवे धनी भगवन्त सु प्रान लों पुत्र प्रजा अनुरागे। सो चिरजीवी रहे सुख सों सुभ राज करै अंग दाग न लागे॥३०॥

है विषई जो बसै घर में अरु आपने काजन ख्याल न लावै। चाकर नेक डरै न कहूँ अपने मन की सब चाल चलावै॥ नीति अनीति बिचारै नहीं अपराध बिना जे प्रजाहि सतावै। श्रीभगवन्त कहै प्रन कै सुचि राज रहेहू महा दुख पावै॥३१॥

राज के वित्त में चित्त धरै गुनि साह दिये पै कछू बचि आवै। एक खजाने भरै चित दै पुनि दूसरो राज के काज में जावै॥ तीसरो बाहन चाकर में भगवन्त कहै अति आनद छावै। चौथेमें आपनो खर्च करै दिन दूनोई दूनो सुराज बढ़ावै॥३२॥

ऍड़ सो बैठे सभासद साथ सु तत्थ कथा तें महासुख मानै। न्याव निबेरै रहै निरसंक सुमन्त्रिन के करै मन्त्र प्रमानै॥ बात सुनै सबही की सदा भगवन्त कहै रस बातन ठानै। रीझ औ खीझ पचावै नहीं तिहिं भूपति को सबही डर मानै॥३३॥

जो हहराय हँसै अतिहीं सबही सों मजाक मजा मन ठानै। मन्त्रिन की न सलाह सुनै औ वृथा सब बातनि में सुख मानै॥ बैठ करै छिन कारनहीं भगवन्त गुनै सब लोग समानै। रीझ औ खीझ न जानि परै तिहि भूपति को न कोऊ डर मानै॥ ३४॥

लोलुपता बिसुनी विषई अति भावै सुबास तियान के खेरै। मादकता जड़ता हठता पुनि चापलता बस चेरनि चेरे॥ आलसी आदी अनुद्यमता भगवन्त कहै अनसूनत प्रेरे मूरखता सठता कृतहा अहैं ये महा दोष महापति केरे॥

साहसी धीर छमी उदमी सुचि वीर निसंक अछोभ अ-भेरे। संजमी नेमी जयी बिजयी पुनि सर्वग सर्व दियो दय हेरे ॥ है सरबज्ञ बिश्वास अवश्य कहै भगवन्त दयागुण खेरे। आलसहीन प्रबीन सदा अहैं लच्छन मंजु महीपति केरे ॥

चारि घरी रहै राति जगै ओ धरै सुचि ध्यान सु दैत्य निकन्दन। आठहू जाम को काम विचारि बिचारि करै गज बाजि सो स्यन्दन ॥ खोटे खरे पुनि लोगन के भगवन्त गुनै सब के मग फन्दन। सीस नवाइ दुहूं कर जोरि करै उठि के रवि को पुनि बन्दन ॥ ३७ ॥

प्रात कृपा गुरु के पदबन्दि अरै पुनि गैयन के सुचि खेरे। त्यों गज बाजि सुबाहन चाकर बैठि लखै पुनि चेरनि चेरे ॥ मन्त्रिन मन्त्रना जन्त्रना स्यो भगवन्त जू राज के काजनि प्रेरे। पाहिले जाम अगामनि सो अहैं काज इतेक महीपति केरे।३८।

चारनि बैन कहूँलिग के सु लखे अपने नगरी पुर ग्राम। चित्त धरै उ निबेर करै सु गुनै मन में जित बाम अबाम ॥ श्रीभगवन्त जथोचित कै सुचि न्हाइ जपै हरि को कछु नाम। भोजन भौन महीपति को सुचि काम इतेक सु दूसरे जाम ॥

मन्त्रिन साथ सभा मद मैं सुठि प्रेरे सु देखिबो खाता बही को। दैचित चोखे चुने सिगरो झिगरो बिगरो निज हाथ सही को ॥ श्रीभगवन्त जू आमद खर्च खजाने भरै कछू बाकी रही को। न्याव निबेरि सु ताखि सबै करै तीसरे जाम में काम मही को ॥ ४० ॥

सैल सिकारी सवारी सुबाहन साजि कछू कढ़ि दूर लौं जैबो। बाटिका बागन को भ्रमिबो पुनि बैठि अखारे में ताल बजैबो ॥ श्रीभगवन्त प्यारनि हेरि सु खेलनि साथ कछू पुनि धैबो। जाम चतूरथमें सुखधाम सु काम इतेकसुआगनें लैबो॥४१॥

बेद को बाद बिबेक पुरानन सज्जन तें करिबो मत बाद।

आगम औ असमृत्तिन पै अखिो करिबो भरिबो अहलाद ॥
त्यों भगवन्त रसज्ञन पै गति संगति कै बहु बाद्य बिवाद ।
आनदकन्द अहै पचयें छठयें लों कछू सुनिबो सुचि नाद ॥

कबित्त

प्रथम बिधाता तें प्रगट भए बन्दीजन पुनि पृथु यज्ञ तें प्रकाश दरसात है। मानो सूत सौनकन सुनत पुरान रहे जस को बखाने महा सुख सरसात है ॥ चन्द चउहान के केदार गोरी शाह जू के रंग अकबर के बखाने गुन गात है। काग कैसो भाग * अजनास धन † भाटन को लूटि धरैं जाको खुरा खोज मिटि जात है ॥ ४३ ॥

कबित्त

दिया है खुदा ने खूब खुसी करो ग्वाल कबि खाव पियो देव लेव यही रह जाना है। राजा राव उमराव केते बादसाह भए कहां ते कहां को गए लग्यो ना ठिकाना है ॥ ऐसी जिन्दगानी के भरोसे पै गुमान ऐसो देस देस घूमि २ मन बहलाना है। आए परवाना पर चले ना बहाना इहां नेकी करि जाना फेरि आना है न जाना है ॥ ४४ ॥

नूरजहां बेगम को भाई जैन खां नवाब जिनकी खताई गंग कबि ने कही हती। अजहूं लों जात चली बात वह जहां तहां मुलक खजाना कहा उनको कमी हती ॥ कृपामणि कहै श्रौन दैकें सरदार सुनो मानिये नसीहतीन कौन की न श्री हती। यातें भूलि बैर नहीं कीजे कबि लोगन तें कबिन के बैर कैयो जुग लों फजीहती ॥ ४५ ॥

---

* कहते हैं कि मारवाड़ी लोग श्राद्ध में गुप्त रीति से प्रथम काग को खिला कर तब ब्राह्मण भोजन कराते हैं।

† अजनास धन = गुप्त धन ।

पट चाहे तन भेंट चाहत छदन मन चाहत है धन जेती सम्पदा सराहबी । तेरोई कहाय के रहीम कहै दीनबन्धु आपनी बिपत्ति जाय काके द्वार काहबी । पेट भर खायो चहै उद्यम बनायो चहै कुटुम जियायो चहै काढ़ि गुन लाहबी । जीविका हमारी जो पै औरन के कर डारो ब्रज के बिहारी तो तिहारी कहा साहबी ॥ ४६ ॥

सवैया

अर्थ है मूल भली तुक डार सु अच्छर पत्र को देखिकै जीजै । छन्द है फूल नवो रस हैं फल दान के बारि सों सींचिबो कीजै ॥ दान कहै यों प्रबीनन सों कबि की कविता रस राखि कै पीजै । कीरति के बिरवा कबि हैं इनको कबहूं कुंम्हिलान न दीजै ॥ ४७ ॥

दोहा

सहाबाद के मध्य इक रजधानी डुमराँव ।
कबि अजान तिहि में रहत जपत सदा हरि नाँव ॥
काहू तें न बिगार है काहू तें न बनाव ।
मो तें सब सम भाव हैं हौं सब तें सम भाव ॥ ४९ ॥
कलि में बढ़े कपूत लखि औ कविजन-अपमान ।
उदासीनता भाव तें संग्रह कियो अजान ॥ ५० ॥
मेरो दोष न दीजियो लखि लीजो करतूत ।
सम भावहिं संग्रह कियो कबिजन की कहनूत ॥ ५१ ॥
चन्द बेद ग्रह मेदिनी * सम्बत् विक्रम भूप ।
पौष पूर्णिमा को भयो संग्रह ग्रन्थ अनूप ॥ ५२ ॥

इति ।

---

* सम्वत् १९४१ विक्रमीय ।

कवि नामावली ।

१—अगर ।

२—अजान संग्रहकर्त्ता डुमराँव ।

३—अनन्य ।

४—अम्बिकाप्रसाद श्रीपं० अम्बिकादत्त व्यास साहित्याचार्य्य बनारस ।

५—उदेश बन्दीजन बुन्देलखण्ड ।

६—कर्णेश बन्दीजन असनी जिला फतेपुर ।

७—कबीरदास जोलाहा बनारस ।

८—कादर कादिरबख्शखां पेहानी वाले रसखान के शिष्य ।

९—केशव सनाढ्यमिश्र टिहरी बुन्देल कवीश्वर महाराजा इन्द्र-जीत बुन्देला ओड़छा बुन्देलखण्ड ।

१०—कोविद दिग्विजयी पं० उमापति तिवारी अयोध्या ।

११—कृपामणि ।

१२—गङ्ग बन्दीजन कवीश्वर बादशाह अकबर दिल्ली ।

१३—गिरधर कविराय बन्दीजन अन्तर्वेद ।

१४—गोकुल वा बज्र कायस्थ बलरामपुर अवध ।

१५—गोपाल बन्दीजन मनियारा मथुरा ।

१६—गोविन्द ।

१७—गोविन्दलाल।

१८—ग्वाल बन्दीजन मथुरा।

१९—घाघ कानकुब्ज ब्राह्मण अन्तर्वेद।

२०—घासीराम।

२१—ठाकुर, नरहरिवंशीय महापात्र बन्दीजन असनो जिला फतेहपुर।

२२—तोष।

२३—दान।

२४—दास भिखारीदास कायस्थ अरवर जिला प्रतापगढ़।

२५—दीनदयालगिरि संन्यासी काशी।

२६—नयन।

२७—नवीज़।

२८—नायक।

२९—प्रधान रामनाथ प्रधान मुसाहिव महाराजा विश्वनाथसिंह देव बहादुर रीवाँ।

३०—प्रवीन।

३१—प्रसन्य।

३२—फेरन।

३३—विप्रप्रसाद।

३४—बिहारीलाल चौबे सतसईकार।

३५—बुद्धसेन अजब नहीं कि यही बोधा कवि हों।

३६—बेताल बन्दीजन कवीश्वर विक्रमशाह।

३७—बेनी बन्दीजन बेंती जिला रायबरेली।

३८—बंशगोपाल।

३९—ब्रजनिधि महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर।

४०—भगवन्त बिठूर जामताली प्रतापगढ़।

४१—भुवनेश (प्राचीन) बन्दीजन असनी फतहपुर।

४२—भुवनेश (वर्त्तमान) रामनगर बनारस।

४३—मिथिलेश।

४४—मून ब्राह्मण असोथर गाजीपुर फतहपुर।

४५—यशवन्त महाराजा यशवन्तसिंह देव बहादुर तिर्वा जिला फरुखाबाद।

४६—युवराज।

४७—युगलकिशोर।

४८—रहीम नौव्वाब खानखाना।

४९—राम कवि प्राचीन बन्दीजन बुन्देलखण्ड।

५०—रामकवि नवीन बन्दीजन शिवपुर बनारस।

५१—रायसन्तति।

५२—लाल बिहारीलालत्रिपाठी टिकमापुर जिला कानपुर।

५३—शिवराम बन्दीजन असनी जिला फतहपुर।

५४—शिवलालदूबे ब्राह्मण डौड़िया खेरे।

५५—शुकदेवमिश्र ब्राह्मण दौलतदुर जिला रायबरेली।

५६—शुकदेव कवि कम्बिला।

५७—श्यामलाल।

५८—श्यामसेवक मऊगञ्ज रीवाँ।

५९—श्रीकवि पण्डित विजयानन्द तिवारी बेलवटी जिला आरा।

६०—संगम।

६१—सन्तन ब्राह्मण जाजमऊ कानपुर।

६२—सर्दार बन्दीजन ललितपुर बुन्देलखण्ड।

६३—सियानन्द।

६४—सुवेश।

६५—हरिकेश जहांगीराबाद बुन्देलखण्ड।

६६—हरिनाथ नरहरिजी के पुत्र असनी जिला फतहपुर।

६७—हेम।

समालोचना

बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी तथा अमेरिका की ओरियण्टल रायल एशियाटिक और जर्म्मन ओरियण्टल सोसायटी के मेम्बर जी० ए० ग्रियर्सन स्कायर सी० आई० ई० आई० सी० एस० का पत्र—

(CAMP)
15th January 1891.

Magistrate House,
Howrah.

Dear Sir,

I have to thank you for your letter of the 12th instant and for the books which you have sent. I have known your "विचित्रोपदेश" for a long time and have read it more than once with great pleasure

It is a valuable collection of short Poems. When I can find time it will give me great pleasure to read the other books which you have been kind enough to send.

Yours faithfully
(Sd.) G. A. Grierson.

To,

Pandit Nakchedi Tiwary.

अनुबाद।

मजिस्ट्रेटी मकान हवड़ा
दौरे में—१५ जनवरी १८९१

प्रिय महाशय—

आप के १२ तारीख के पत्र तथा उन पुस्तकों के लिए जो आपने मेरे पास भेजी हैं, मैं आपका धन्यवाद देता हूं मैं आप के "विचित्रोपदेश" को बहुत दिनों से जानता हूं और मैंने कई बार उसे प्रसन्नता के साथ पढ़ी है। यह छोटा २ कविताओं का बहुत अच्छा संग्रह है जब मुझे अवकाश मिलेगा तो मैं अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उन दूसरी पुस्तकों को भी पढ़ूंगा जिन्हें आप ने मेरे पास भेजी हैं।

आपका हितैषी
(द:) जी० ए० ग्रियर्सन
श्रीयुत पं० नकछेदी तिवारी जी के समीप।

बसन्तमालती और संसारचक्र के रचयिता प्रसिद्ध पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का पत्र।

२० बांसतल्ला ष्ट्रीट कलकत्ता २२-१२-१९०१

भड़ौआसंग्रह के प्रथम तथा तृतीय खण्डों को मैंने देखा, देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। बास्तव में यह संग्रह संग्रह के योग्य है, यद्यपि इसका नाम भड़ौआसंग्रह है परन्तु गुण में ऐसा नहीं है, इसमें अच्छी नीति और उत्तम उपदेश के कवित्त भरे हैं जो याद करने योग्य हैं। इसका नाम 'भड़ौआसंग्रह' यदि न होता तो अच्छा था। इस पुस्तक के प्रचार होने से मुझे आनन्द होगा।

भवदीय जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी।

मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ, मेम्बर मोहकमे तवारीख, डिप्टी सुपरिण्टेण्डेन्ट सेंसेस जोधपुर राज्य तथा मेम्बर रॉयल एशियाटिक सोसायटी लण्डन, का पत्र।

यह अनोखी पोथी तिवारी नकछेदीजी ने डुमरावँ से भेजी, मैंने देखी इसमें चोज चुहल और कटाक्ष भरे कवित्त अनेक सुघड़ कवियों के संग्रह किये गये हैं, वे चित्त में चमत्कार उपजाने बातचीत में चतुर बनाने और नीति में निपुणता सिखाने को मानो अति उत्तम और उपयोगी उपदेशिक हैं।

ऐसे सलोने सवैये और मीठे कवित्त सौ ग्रंथों में सोधे से भी मिलते नहीं, न जाने सुजान नकछेदी जी ने कहां २ से ढूंढ़ कर निकाले हैं फिर मजा यह है कि अभी आप अजान ही बने हुये हैं, क्यों न हो यह भी एक मजाकही की बात है।

दोहा।

श्रवन नयन मुख नासिका सब के एकहि ठौर।
कहिबो सुनिबो देखिबो चतुरन को कछु और॥

यह पुस्तक सुन्दर और सर्वप्रिय होने से तत बार तो पहिले छप चुकी है और चौथी बार अब छपती है। तिवारी जी ने हर आवृत्ति में कुछ न कुछ नई चाट देकर श्लोकसंख्या बढ़ाई है।

देवीप्रसाद जोधपुर पौष सुदी ५ सं० १९५८

———o———

छत्तीसगढ़ मित्र पिंडरा जिला बिलासपुर सी०पी०
वर्ष २ अंक १२ दिसम्बर १९०१।

"भड़ौआसंग्रह चतुर्थखण्ड'—डुमराँवनिवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि द्वारा संगृहीत और समालोचनार्थ प्राप्त, यह पुस्तक सर्वथैव संग्राह्य है।

———o———

हिन्दोस्थान कालाकांकर ११-२-१६०२

भड़ौआसंग्रह तीसरा और चैाथा भाग, डुमराँवनिवासी नलछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि कृत सामयिक कबित्तों का सग्रह है। संग्रह अच्छा हुआ है।

———o———

श्रीवेंकटेश्वर समाचार बम्बई ७ मार्च १६०२

भड़ौआसंग्रह–अनेक प्राचोन तथा नवीन कवियों की कविताये संग्रह करके डुमरांवनिवासी नकछेदी तिवारी ने प्रकाश किया है। संग्रहकार ने लिखा है, "एक बार पढ़िये सौ बार सराहिये" यह कहना मिथ्या नहीं है। बास्तव ही में संग्रह अच्छा हुआ है।

इस पुस्तक की समालोचना ते। कई महाशयोँ ने की है परन्तु यहां पर केवल दे। समालोचना अर्थात मुन्शी देबी प्रसाद साहब मुन्सिफ रेयासत जोधपुर तथा पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्बेदी ग्रन्थकर्ता बसन्त मालती और संसार चक्र, नं० २० बांस तला ष्ट्रीट कलकत्ता कृत बतौर नमूना के दी गई है। और समालोचनायें दूसरे भाग मे छापी जायँगी।